हातिम शाहाबाद से निकल पांच छः कोस पर-
जा एक पत्थर की सिला पर बैठ सिर नीचा कर सोचने ल
गा कि परमेश्वर ऐसा मोती कहां हाथ लगे पर तू ही कु
छ अपनी दया करै तो वह मिलै इतने में सांझ हो गई-
सात रंगीना तिकाका एक जोड़ा जिस के बसेरे की ज
गह क़हरमान नदी तीर थी परमेश्वर की इच्छा से एक
वृक्ष पर आ बैठा मादा बोली कि यद्यपि हमारे खाने की
वस्तु यहां भांति भांति की है पर यहां की पवन और ज-
ल सुखकारी नही इस लिये यहां से उड़ चलना चाहि
ये नर बोला कि मेरा मन था कि कुछ दिन इस जंगल
में रहूं पर अब तेरे कहने से प्रातःकाल अपने देश को
चलूंगा धीर्य रख एक घड़ी चुप की रह मादा ने फिर क
हा कि यह मनुष्य कौन है जो सिर झुकाये इस जंगल में
उदास सोच करता बैठा है नर बोला कि यह हातिम य
मन का शाहज़ादा है जितना उदास हो अयोग्य नहीं।
क्यौंकि उसे मुरग़ावी के अंडे समान मोती चाहिये अ
पने लिये नहीं परमेश्वर हेत दूसरे के लिये इस ने परि
श्रम किया है मुनीरशामी शाहज़ादा हुस्नबानू पर आ-
शिक़ हुआ वह सात बातें कहती है मुनीरशामी उस-
की कोइ बात पूरी न कर सका और न उसको उस से
छोड़ा गया इस्से वह बावला सा फिरता फिरता यमन
के जंगल में जा निकला और हातिम भी शिकार खेल
ता उसी जगह आया दोनों मिल गये मुनीरशामी ने
अपना सारा वृत्तांत कहा हातिम ने तरस खा के उसके
लिये बिदेश किया और ये दुख अपने सिर पर लिये सो उ
स की पांच बातें पूरी कर चुका अब छठी बात की बारी है
और वह मुरग़ावी के अंडे समान मोती लाना है इस लिये

इस वृक्ष के नीचे सोच का मारा बैठा है कि किधर जाऊं और ऐसा मोती कहां से लाऊं सच है कि वे देखी राह कैसे चलें और ऐसा मोती कहां से लावे पर जो तू कहै तो मैं उसे राह बता दूं वह बोली कि इस्से क्या भला है कि मनुष्य का उपकार पक्षी से हो सके जब उस की इच्छा पाई तब नर कहने लगा कि ऐसा मोती ऐसे उपजा है कि अगले समय में कितने पक्षी तीस बरस पीछे क़हरमान नदी के किनारे ऐसा अंडा रखते थे उस में एक अंडा शामशाह को मिल गया यद्यपि उस के पास धन रत्न पहिले ही बहुत था और उसने एक बड़ा शहर भी बसाया अब वह उजाड़ पड़ा है वह सब सम्पदा हुस्नबानू के हाथ लगी वह अंडा भी उस में था जो उसने पाया अब जमशाह क़हरमानी मर गया। और उस का राज्य और किसी ने ले लिया उस की स्त्री गर्भवती वह मोती लेके भागी और एक जंगल में जा पड़ी पहर भर दिन था कि क़हरमान नदी के किनारे आ निकली उसी समय मसऊद सौदागर भी नाव पर बैठा हुआ आ निकला उस स्त्री ने नाव को देख पुकारा कि परमेश्वर के लिये मुझ दुखी को भी चढ़ा लो सौदागर ने दया कर नाव किनारे पर लगा दी और उसे नाव पर बिठा के उस का वृत्तांत पूछा उस ने सब कह दिया मसऊद सौदागर ने उसे अपनी बेटी बना के अपने शहर में लाया कुछ दिन बीते उस स्त्री के बेटा हुआ उस का नाम बरज़ख रक्खा जब वह लड़का सयाना हुआ मसऊद मर गया उस की संपदा उस लड़के को मिली वह बहुत दिन तक उस धन संपति से लाखों सिपाही नौकर रक्खा किया कई हज़ार गांव अपने बश कर वहां

का बादशाह होगया जब वह मरा तब सुलैमान बाद-
शाह हुए उन्हों ने कोहक़ाफ़ का देश क़ुलज़ुम क़हर-
मान सौने अग्नि की नदियों सहित जो कोहक़ाफ़ के दे-
श की थीं मनुष्य दुखदाई देवों और परियों जादूगरों के
रहने को दिया और कहा कि तुम सब इसे बसाओ मनु
ष्यों के शहरों की ओर न जाओ उस देश और शहर में
वेई बस्ते हैं मनुष्य का वहां कुछ प्रचार नहीं निदान होते
होते वह मोती झशाम परी सुर्ख कुलाह के हाथ लगा अ
ब माहयार सुलैमानी ने जो मनुष्य और परी से उत्प-
न्न हुआ है उसे ले लिया इन दिनों वह बरज़ख के देश
में रहता है उस कें एक लडकी परम सुंदर चंद्रमुखी
है पर उस का व्याह इस बात पर ठहराया है कि जो को
ई उस मोती के उपजने का वृत्तांत प्रगट करेगा मैं इ
स लडकी का व्याह उसी के साथ कर दूंगा यह बात सु
न बहुत से परी जाद उस के पास आये पर कोई उ-
स मोती के उपजने का वृत्तांत नहीं जानता था जो ब
रणन करता सब निराश हो के फ़िर गये और माह
यार सुलैमानी बडा विद्यावान है और उस समय की
किताबें भी उस के हाथ लगी हैं उसने उन किताबों
को पढ़ के उस मोती के उपजने का वृत्तांत जाना है
और उन पक्षियों को सुलैमान के समय से आज्ञा
नहीं है कि कहीं अंडा देवें इसलिये ऐसा मोती अब
नहीं उपजता इस बात के कहने की रोक है पर मैंने
हातिम के साहस और दया को देख यह वृत्तांत प्रगट
किया यह भले कामों में तन मन से परिश्रम करता
फिरता है उस का मनोर्थ पूर्ण होगा मादा ने कहा कि
यह दुखी अपाहिज क़हरमान नदी तक कैसे पहुंचेगा

क्योंकि वहु देवों की राज्य में है उस मारग में और भी बा-
धा हैं नर ने कहा कि जो यह जीता रहैगा तो परमेश्वर की
इच्छा से पहुंचना कुछ दूर नहीं लेकिन हमारे पर कुछ
थोड़े से अपने पास रक्खे किस लिये कि जब कोहकाफ़
की सीमा में पहुंचैगा तब एक बड़ा जंगल मिलैगा जिस
का कुछ और छोर नहीं उस में जाने के समय हमारे ला
ल पर जला के पानी में घोल अपने सारे बदन में मलै
फिर वे धड़क चला आय उस की गंध से सब काटने फा
ड़ने वाले जीव सब भाग जायंगे और इस का आकार भी
देव के समान हो जायगा जब उस जंगल से निकल ब-
रज़रव टापू में पहुंचै तब उजले पर जला के उस की रा
ख पानी में घोल बदन में मल के न्हाइ धोइ स्वच्छ हो-
जाय परमेश्वर की कृपा से जैसा था वैसा ही हो जायगा
पर वहां के लोग उसे पकड़ के माहयार सुलैमानी बाद-
शाह के पास ले जायंगे यह अपना अभिप्राय उस्से क
है पर वह यही कहैगा कि जो कोई इस मोती के उपजने
का वृत्तांत बतावैगा उसे मैं अपनी बेटी इस मोती समेत
दूंगा यह उचित है कि यह इस बात को यथार्थ स्मरण करै
भूल न जाय यह कभी न होगा कि माहयार सुलैमानी
अपनी बात से फिरै क्यो कि वह अपनी बात का बहुत-
पूरा है अवश्य अपनी बेटी व्याह देगा मादा नें कहा कि
हमारे पर यह कैसे पावै इस बात के सुनते ही नर ने अ
पने पर फट फ़टाये कितने एक पर गिर पड़े हातिम ने
सब के सब चुन लिये और बहुत प्रसन्न हुआ मादा बो
ली कि तू ने कैसे जाना कि यह इस काम के लिये आया
है और इतनी कहानी तुझे कैसे याद रही उसने कहा कि
हमारी जाति में जितने नर हैं सारे जगत का वृत्तांत और

से छोर तक जानते हैं श्रौर वे बात चीत से श्रधिक श्रौर
कुछ नहीं जानते इतने में प्रातःकाल ड्डश्रा श्रौर वह-
जोड़ा उड़गया श्रौर हातिम उठके एक श्रोर को चल नि
कला दो चार दिन बीते एक वृक्ष के नीचे सो गया इतने-
में बड़्त जीव पुकार करने लगे कि हाय हाय कोई ऐसा
परमेश्वर का जन नहीं जो हमारी रक्षा करे इस के सुन
ने ही हातिम मन में कहने लगा कि मैं भी तो परमेश्वर का
जन हूं मुझे श्रवश्य चल के उस की दसा पूछ सहाय क
रना चाहिये यह सोच उसी श्रोर चल खड़ा ड्डश्रा पास
पड्डंच के देखा कि एक लोमड़ी धरती पर हाथ पांव पटक
पटक चिल्लाती है उसकी यह दशा देख हातिम ने बड़ी
दया से पूछा कि तुझे किस निर्दयी ने सताया कि ऐसा वि
लबिला रही है वह बोली कि धन्य है तुझे श्रौर तेरे साहस
श्रौर बीरता पर जो ऐसे दुख में मेरे पास श्राके मेरा वृ-
तांत पूछा एक बहेलिया मेरे नर बच्चों समेत पकड़ ले गया
इस लिये रो रो पछारें खाती हूं श्रौर सब श्रोर पुकारती फि
री पर किसी ने मेरा दुख न सुना एक तू श्राया है देखिये
क्या हो क्यौंकि तू मनुष्य श्रौर मैं पशु मैं जानती हूं कि तू श्र
पनी जाति का पक्ष करैगा हातिम बोला कि तू यह क्या क-
हती है सब मनुष्य एक से नहीं कितने कोमल चित्त दया
वान श्रौर कितने निर्दयी जीव दुख दाई हैं श्रब तू कह कि
तेरे बच्चौं श्रौर नर को कौन कहां ले गया वह बोली कि यहां
से छः सात कोस पर एक गांव है उस में एक बहेलिया
रहता है उस दुष्ट का यही काम है मैं नहीं जानती कि हमा
रे दुख देने से उसे क्या प्रयोजन कि परमेश्वर को नहीं डरता
हातिम बोला कि श्रांधी को फल गिराने श्रौर निर्दयी को जी
वौं के सताने का विचार नहीं उन्हौं ने श्रपनी यही वृत्ति ठह-

गई है तू मुझे राह बता दे तो मैं तेरे नर और बच्चों को छुड़ा लाऊं जो उन के बदले वह मेरा सिर भी मांगेगा तो नाहीं न करूंगा क्योंकि यह परमेश्वर के मार्ग का सौदा है लोमड़ी बोली कि जो मैं तेरे साथ चलूं तो ऐसा न हो कि उस्से मिल के मुझे भी पकड़ ले तो मेरी दसा उसी बंदरिया कीसी हो हातिम बोला कि उस का वृत्तांत कैसा है वह बोली कि एक बंदरिया ने किसी जंगल में जाके गड्हे में बच्चे दिये एक दिन उस जंगल में कोई बहेलिया जा निकला बच्चे अपने बाप के साथ बैठे थे बहेलिया ने घात लगा उन को पकड़ लेगया और एक धनवान के हाथ बेच डाला यद्यपि पशुओं में बंदरिया बड़ी चतुर होती है पर जब बुरे दिन आते हैं तब चतुराई काम नहीं करती वह बंदरिया भी पकड़ी गई उस का वृत्तांत यह है कि बंदरिया अपने बंदर और बच्चों के बिरह में सिर टकरा रोती फिरती थी। एक दिन व्याकुल हो ज़िमीदार के पास पुकार करने गई उस ने उस की दुर्दसा देख तरस खा के कहा कि इसे किसने सताया है जो ऐसी बिलबिलाती है किसी ने कहा कि इस के बंदर और बच्चों को वह बहेलिया पकड़ ले गया और उस जगह रहता है ज़िमीदार ने कहा कि तू अभी जाके उस के बंदर और बच्चों को छुड़ा दे वह उस के कहने से उधर चला और बंदरिया भी साथ होली जब वह बंदरिया समेत गांव में पहुंच के बहेलिये के दरवाजे जा पुकारा बहेलिया बाहर निकल आया बंदरिया ने चाहा कि इस के कपड़े टुकड़े टुकड़े कर डालें इतने में उस ज़िमीदार ने बाहर निकल के कहा कि अरे तूने इस के बंदर और बच्चों को क्या किया उस ने बिनती की कि प्रभु कई दिन की बात है कि मैंने आपही के हाथ बेचे हैं जो उस की दीनता पर दया करते

हो तो उन्हें उसे देदो और दाम मुझ से फेरलो उस ने कहा
कि अब तो में उन से अपना जी बहलाता हूं कैसे दूं कोई
और उपाय बतला जिस में उसे भी संतोष हो और ये
भी मेरे पास रहें बहेलिया बोला कि इसे भी पकड के उ-
न्हीं में बंधवा दीजिये फिर बहेलिये ने छल छिद्र कर बं-
दरिया को भी पकड़वा दिया जब ज़िमी दार ने सुना कि वह
भी पकड़ी गई तब बहेलिये को कहला भेजा कि बंदर बंद
रिया को बच्चों समेत मेरे पास ले आ यह सब को पकड़े
हुए ज़िमीदार के पास लाया ज़िमी दार ने देखते ही कहा
कि बच्चे मेरे पास रहें और बंदर बंदरिया तू लेजा निदा
न बच्चों के बिरह की पीर से बंदरिया मर गई और बंदर
ने बंदरिया के दुख से प्राण दिये मनुष्य का निर्दयीपन औ
र अन्याय तू ने सुना फिर तेरी बात का विश्वास करूं जो तू
भी मेरे साथ वैसा ही करै और मुझे आपदा में डालै तो हाति
म बोला कि अरी लोमड़ी तू निश्चय जान कि में उन लोगों
में नहीं हूं परमेश्वर की सौगंद मैं तुझ से विश्वासघात न क
रूंगा तू बे धड़क मुझे उस गांव तक ले चल कि मैं तेरे नर
को बच्चों समेत छुड़ाऊं यह बात सुन वह प्रसन्न हुई और
हातिम के साहस पर धन्य धन्य कर आगे होली हातिम
उस के पीछे पीछे चला पहर रात गये उस गांव के पास
पहुंचे हातिम ने लोमड़ी से कहा कि अब तू यहां छिप रहै
में बस्ती में जा के बहेलिये को ढूंढ निकालता हूं वह किसी
झाड़ी में छिप के बैठ रही और हातिम प्रातःकाल तक प-
रमेश्वर का स्मरण करता रहा सूरज निकलते उठ के ब
हेलिये के दरवाजे आ के पुकारा वह निकल आया और
पूछा कि तुम्हें मुझ से क्या काम है जो ऐसे प्रातःकाल आ
ये तू तो हमारे गांव का रहने वाला नहीं हातिम बोला कि

मुझे ऐसा रोग हुआ है कि उस की औषधि वैद ने बताई है कि जो लोमडी का गरम रुधिर अपने बदन में मले तो अभी अच्छा होय जाइ इस लिये तेरे पास आया हूं कि तू लोमडियों औ गीदडों को पकड लाता है जो तीन चार बच्चे लोमडी के तेरे पास हों तो मुझे दे और जो दाम चाहै सो ले उस ने कहा कि मैंने सात लोमडियां पकडी हैं जितनी चाहिये ले ले यह कह उन सातों को हातिम के सामने लाया उस ने सात रुपये दे सातों को लें लिया और जंगल में ला हाथ पांव की रस्सियां खोल छोड दिया बच्चे दौड के अपनी मा के पास जा बैठे। वह उन्हें प्यार कर जो नर के पास आई तो देखा कि वह मरन हार है यह दसा देख रोने पीटने सिर पर धूल डालने लगी हातिम ने कहा कि अब क्यों रोती पीटती है वह बोली कि आज मेरे सिर का मुकट उतरा जाता है क्यों न सिर पीटूं तूने नहीं सुना है कि पुरुषों को-स्त्रियों के सिर का छत्र कहते हैं सो यह भूख प्यास से मरा जाता है हातिम बोला कि अरी मूरख उस की-आयुर्दाय इतनी ही थी क्योंकि अब तक भला चंगा रहा और अभी ऐसा निर्बल हो गया कि सांस भी नहीं ले सकता उस ने कहा कि मेरे बिरह और बच्चों के दुख ने उस की यह दसा की है जो अभी औषधि हो तो भला-चंगा हो जाय हातिम ने पूछा कि कौन सी औषधि है। बता कि उस का उपाय किया जाय उस ने कहा कि जो जीते हुए मनुष्य को मार के उस का रुधिर इस के मुह में टपकाओ तो अभी अच्छा हो जाय हातिम बोला कि मुझे मनुष्य से ऐसा क्या बैर है जो पशु के लिये उसे मारूं जो तुझे मनुष्य का रुधिर चाहिये तो ब

ता कि किस जगह का हो तुझे दूं वह बोली कि कहीं का
के पर गरम हो हातिम ने तरकश से तीर निकाल बां
यें हाथ की हफ़्त अंदाम नस की फ़स्द खोल के कहा कि
जितना रुधिर तुझे चाहिये सो लैले वह अपने नर को उ
स के पास ले जाके कहा कि जितना उस के मुह में डा
लोगी उतनी ही दवा है हातिम ने इतना रुधिर पिला
या कि उस का पेट भर गया और रुष्ट पुष्ट हुआ तब हा
तिम हाथ पर पट्टी बांध के बोला कि अरी लोमड़ी अब
तू मुझ से प्रसन्न हुई वह बच्चों समेत हातिम के पैरों-
पर गिर पड़ी हातिम उसे धीर्य दे के आगे बढ़ा जब भू
ख प्यास लगती तो जंगल के मेवे खा के नदी तालाब में
पानी पी लेता बहुत दिनों में चलते चलते किसी जंगल
में जा पहुंचा सूरज का तेज ऐसा हुआ कि प्यास से व्या
कुल हुआ चारों ओर ढूंढने लगा इतने में एक बरफ़ सा
उजला तालाब दूर से देख पड़ा हातिम सहसा उस की
ओर दौड़ा जब पास पहुंचा तो पानी नोन देखा पर एक
उजला सांप गेंडुले मारे बैठा है चाहता था कि फिरे तब
वह बोला कि अरे घमनी मनुष्य क्यौं फिर चला किस
काम के लिये आया था हातिम ने उसे बातें करते दे-
खा तो अचंभे हो कहने लगा कि मैं प्यासा बहुत हूं दूर
से तेरा उजला रंग पानी सा देख इधर चला आया अ
ब परमेश्वर की रचना देख फिर चला सांप बोला कि-
तू धीर्य कर तुझे यहां सब कुछ मिल जायगा यह कहि
सांप वहां से चला हातिम अपने जी में सोचा कि यद्यपि
यह सांप बातें करता है पर इस के साथ जाना भला नहीं
क्यौंकि यह काल है फिर यह मन में आया कि जो भाग्य
में है वही होगा चला चाहिये उस पर भी धीरे धीरे पैर

रखने लगा सांप ने देखा कि यह चलने में बिलंब करता है
तब बोला कि अरे कुछ संका न कर पैर उठा हातिम देख
द के उस के साथ चला एक परम सुहावनी फुलवारी में
जा पहुंचा उस की रमणीकता से उस का जी खिल गया
और बहुत प्रसन्न हुआ क्यौं कि ऐसी रमणीक फुलवारी
कहीं नहीं देखी थी पर परियों के देश में फिर इधर उधर
देखता हुआ एक ऐसी जगह जा निकला कि वहां बहुत
स्वच्छ बिछौना बिछा था और हौज़ के किनारे परम सुंद
र मसनद लग रही थी सांप ने कहा कि तुम यहां बैठो मैं
आता हूं यह कहि के हौज़ में गिर पड़ा थोड़ी बिलंब में परीज़ा
द कई सोने चांदी के थाल रत्नों से भरे सिरों पर रक्खे हुए
उस हौज़ से निकले हातिम को सलाम कर थाल आगे र-
ख दिये हातिम ने कहा कि सच कहो कि तुम कौन हो वे बो
ले कि हम उसी के सेवक हैं जो तुम्हें अपने घर लाया है उस
ने ये रत्न तुम्हारे लिये भेजे हैं आप अंगीकार करैं हातिम
ने कहा कि ये मेरे किस काम के हैं इतनी बस्तु मैं कैसे उ-
ठाऊं और किस पर लाद के ले जाऊं इतने में और कई-
परीज़ाद वैसेई थाल कई रत्नों के लिये हुए हातिम के पास
आये उस ने पूछा कि इस में क्या है वे बोले कि ये अद्भुत-
रत्न तुम्हारे लिये भेजे हैं हातिम बोला कि यह भी मेरी-
आंखों में नहीं समाता इस में और बहुत से परीज़ाद गंगा
जमुनी के थाल जरीदार ले के वस्त्रों से ढके हुए ले के उस
हौज़ से निकले हातिम ने पूछा कि इस में क्या हैं उन्हों ने
कहा कि आप ही के लिये लाये हैं हातिम ने कहा कि बहु
त अच्छा बटोही भी बैठा है पर घर का मालिक कहां है इ
तने में वह सांप सुंदर तरुण बना हुआ चालीस परीज़ाद
साथ लिये हौज़ से निकल आया हातिम उसे देख अचम्भे

में हुआ कि यह कौन है और उस के सनमान के लिये उ-
ठा उसने हातिम का हाथ पकड़ आदर पूर्वक मसनँद
पर बिठाल के पूछा कि तुम मुझे पहिचानते हो हातिम-
बोला कि जो कभी देखा होता तो पहिचानता उसने मुस
क्या के कहा कि मैं वही हूं जो तुम्हें यहां लाया हातिमबो
ला कि पहिले तू सांप था अब मनुष्य कैसे हुआ वह बोला
कि यह भेद खाना खाने पीछे खुल जायगा फिर दस्तर
खान बिछा और दो परी जाद जड़ाऊ चिलमची आफ़ता
व समला के हाथ धुलवाये वे खाना खाने लगे सब परी
जाद अपने अपने काम में प्रवृत्त हुए हातिम खाना खाता
जाता था और जी में कहता कि मैंनें ऐसा खाना यहांभी
खाया और पहिले गौशालब परी के यहां खाया था निश्च
य है कि यह भी परी जाद हो जब खाना खा चुके तब जड़ाऊ
अतर दान पान दान आया हातिम ने जो अतर मला तो
जी लहक उठा अचम्भे में हो मन में कहने लगा कि परमे
श्वर ने ऐसी उत्तम वस्तु और सुगंध जो इस जात को दी है
सो मनुष्य को नहीं मिलती इस में क्या भेद है वही परमेश्व
र जाने फिर घर के मालिक से पूछा कि पहिले तुम सांप थे
फिर परीजाद कैसे हुए इस का कारण क्या है वह बोला कि
मैं परी की जाति से हूं और मेरा नाम शुानशाह है एक दि
न हजरत सुलैमान के समय में अपने बाग़ की सैर कर र
हा था मन में यह आया कि अपना लश्कर लैके मनुष्य
न के देश पर चढ़ जाके उन्हें मार के उन के देश को छीन
लूं क्योंकि वह देश परम सुहावना और सुघर है यह सोच
अपने लश्कर के सिर दारों से कहा कि सब फ़ौज तय्या
र रहै मुझे प्रातः काल एक जगह पर चढ़ाई करना है इत-
ने में रात होगई सुख पूर्वक चित्र सारी में जाके सयन किया

सवेरे जो जगा तो अपने सारे लश्कर सहित सांप के
आकार पाया सारे दिन मीन जल हीन सा धरती पर त-
लफ़ा किया और सांझ से सवेरे तक लटक के परमेश्व
र से बिनती की कि अब मैं ऐसा मनोर्थ न करूंगा पर-
मेश्वर की दया से मेरा सब लश्कर जैसा था वैसा हो
गया पर पक्ष किसी के न हुए फिर मैं बहुत रोया तब
आकाश वाणी हुई कि जो कोई अपने बचन से फ़िर
ता है उस की यही दसा होती है रात को यही आकाश
वाणी नित्त हुआ करती कि एक रात को मैं बहुत रो-
या और यह बिनती की कि फिर ऐसी बात कभी मन में
न लाऊंगा परमेश्वर मेरा अपराध क्षमापन किया तब
यह आज्ञा हुई कि थोड़े दिन धीरज कर तीस बरस बी
ते एक यमन का रहने वाला मनुष्य इधर आवैगा उ
स के देखते ही तू जैसा था वैसा ही हो जायगा तू उसकी
सेवा तन मन से करना वह तेरे लिये परमेश्वर से बिनती
करैगा तो तू सदा परी जाद बना रहैगा नहीं तो फिर सां
प हो जायगा इस लिये तीस बरस से तेरी राह देखता
था तुझे देखते मैंने जाना कि यमन का रहने वाला य
ही मनुष्य है इस आशा से मैंने तन मन से तेरी सेवा
की है जो तू मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करै तो बड़ी
दया है हातिम ने पूछा कि वह कौन सा बचन था जिस्से
तू फिर गया वह एक ठंढी सांस ले कै बोला कि हमारी
जाति ने हजरत सुलैमान पैग़म्बर से प्रतिज्ञा की थी
कि जो तुम्हारे पीछे हम मनुष्यों को सतावैं वा उन के
देश में जाने का बिचार करैं तो परमेश्वर की मार हम
पर पड़े उसी दिन से हमारी जाति ने किसी मनुष्य को
नहीं सताया पर एक दिन मेरे जी में यह खोटा मनोर्थ

हुआ था जिस का यह दंड पाया अब तेरे साम्हने सत्यस
त्य प्रतिज्ञा करता हूं कि परमेश्वर साक्षी है कि फिर ऐसा-
मनोर्थ न करूंगा हातिम ने न्हाइ के पवित्र कपड़े पहिन
उस परीजाद के लिये प्रार्थना की परमेश्वर ने उसे अंगी
कार किया यद्यपि हातिम जाति यहूदी था परमेश्वर को
एक समझता था दिन रात उसी के भजन स्मरण में रह
ता निदान सब परी जादों के पर निकल आये और वह
परी जाद भी वैसा ही बना रहा फिर उस ने हातिम से पू
छा कि आप यहां किस लिये आये हैं और कहां जावगे
हातिम बोला कि अब तो मैं शाहाबाद से आया हूं और
बरज़रव के टापू को जाऊंगा यह कहि के वह चांदी का-
मोती औ नमूना लाया था दिखाया यह सुन के शमशाह
ने कहा कि सच कहते हो इस जोड़ी का मोती उस टापू के
बादशाह के पास है पर उसने प्रतिग्या की है कि जो कोई
इस के उपजने का वृत्तांत बतावै उसे अपनी बेटी मोती
समेत दूंगा पर तू वहां कैसे पहुंच सकैगा क्योंकि रस्ते में
बहुत सी बाधा हैं मनुष्य में इतना पराक्रम नहीं जो नि
वह सकै हातिम बोला जो होनी हो सो हो मैं वहां बिन ग
ये रहूंगा परमेश्वर मेरा रक्षक है शमशाह ने कहा कि
मैं तुम्हारे साथ बहुत से परी जाद किये देता हूं वे तुम्हा
री सहाय किया करैंगे यह कहि के परी जादों से कहा
कि इस की कृपा से तुम बड़ी व्याधि से छूटे इस काम में
इस का साथ दो वे बोले कि जो आप की आग्या होगी
सो तन मन से करैंगे बादशाह ने कहा कि तुम इसे
बरजरव के टापू में पहुंचा दो इस बात के सुनते ही वे स
ब के सब अपना अपना सिर झुका के चुप रह गये फिर
एक क्षण में सिर उठा के बोले कि प्रभू उस टापू में पहुंचना

बहुत कठिन है क्योंकि रस्ते में ऐसे ऐसे देव हैं जो हमें जीता न छोड़ैंगे जो आप उधर आने का विचार करैंगे तौ भी लड़ाई हो गी हम साथ चलने को तय्यार हैं पर इतने लोगों से काम न चलैगा बादशाह ने कहा कि इस शूर वीर के काम में वीरता करना अवश्य है कि इस का उपकार वृथा न हो जाय किसी भांति इस को वहां पहुंचा दो यह बात सुन सात परीजाद साहस बांध के बोले कि आप के प्रताप से हम इसे वहां पहुंचवेंगे पर राह में जो कुछ बाधा होतो आप सहाय करैं बादशाह ने इस बात को मान लिया तब वे एक उत्तम खटोला लाये हातिम को उस पर बिठाया चार ने चारों पाये पकड़े तीन साथ हैके आकाश को उड़े तीन दिन रात चले गये- चौथे दिन जहां देव रहते थे परीजादों ने भूल से एक वृक्ष- के नीचे खटोला उतार के आपस में कहने लगे कि तीन- दिन से कुछ खाना पीना नहीं हुआ यहां घड़ी दो घड़ी आराम करैं और कुछ खायें पीयें यह सुन हातिम ने कहा कि जो उचित जानो सो करो छः परीजाद इधर उधर चले गये एक हातिम के पास खड़ा रहा इतने में कई हजार देव शिकार खेलते हुए आनिकले तो देखा कि एक मनुष्य खटोले पर बैठा है उस के पास एक परीजाद खड़ा है दो चार हजार तो खटोले के आस पास खड़े हो गये छः सात हजार पुकार मचाने लगे कि यह मनुष्य कहां से आया वह परीजाद उन्हें देख कै डरा चाहता था कि हातिम को छोड़ के भाग जाऊं कि देव उस से लड़ने लगे दो तीन को उस ने मार डाला अंत को पकड़ा गया फिर वे देव उस परीजाद को हातिम समेत अपने घर लाये और पूछा कि इस मनुष्य को कहां से लाया और कहां लिये जाता है उस ने कहा कि यह मनुष्य यमन का रहने वाला शाम्शाद

का बडा मित्र है उसे न सता और नहीं तो बहुत बुरा हो
गा वे बोले कि बादशाह का बहुत दिन से कुछ पता भी-
न था अब कहां से उपजा परीजाद ने सब वृत्तान्त वर्णा
न किया देवों के सिरदार ने सिर नीचा करके कहा कि इस
मनुष्य को परीज़ाद समेत उस कुए में क़ैद करदो रात
का खाना खाके उन्हें खाउंगा देवों ने वैसाही किया वे छः परी
जाद जो हातिम और एक परीजाद को छोड़ के खाने की व-
स्तु लेने गये थे वृक्ष के नीचे आये तो उन्हें न देखा और क्या
देखा कि देवों की दो तीन लाशें पडी हैं अचम्भे में हो आ
पस में कहने लगे कि ये देव किस परदे के हैं और इ-
न को किसने मारा उस मनुष्य और परीज़ाद को कौ
न ले गया इन मरे हुओं को कोई न कोई उठाने आवे
होगा इतने में सोच के देखा तो एक को सिसकता पाया
उस के मुंह में थोडा पानी टपकाया उसने आखें खो
ल दीं तब उन्हों ने पूछा कि तू कौन है और तेरा ठिकाना
कहां है उस ने कहा कि मैं मकरनस के देवों में से-
हूं एक परीजाद ने मेरी यह दसा की है पर उसे एक मनु
ष्य सहित पकड़ के मकरनस के पास ले गये हैं वे इ
स बात के सुनते ही उस देव को पकड़ अपने देश में
लाके बादशाह के सामने पुकारे बादशाह ने उन की-
पुकार सुन के कहा कि देखो उन को किसने सताया है
और वह यमन का रहने वाला मनुष्य जिस के साथ में
गये थे सो कहां है उन्हों ने प्रणाम करके कहा कि हम-
जो दो तीन दिन रात चले गये तब भूख प्यास ने बहुत स
ताया इस से मनुष्य को एक वृक्ष के नीचे बिठा और एक
परीज़ाद उस के पास छोड़ हम भोजन के लिये कुछ
ढूंढने गये एक क्षण में आके देखा तो उन्हें न पाया और-

कई मरे हुए देव देखे तब हम अचम्भे में हुए कि उन का समाचार किस से पूछें इतने में सोच के देखा तो एक देव अधमरा पाया उस के मुह में पानी टपकाया जब उसे चेत हुआ तो उस के कहने से जाना कि उस-के साथी उस मनुष्य को परीज़ाद समेत पकड़ लेगये हम भी उसे बांध के आप के पास लाये हैं बादशाह ने कहा कि उसे मेरे सामने लाओ जब वह सामने आया तब बादशाह ने कहा कि मकरनस अभी जीता है और हमें भूल गया वह बोला कि प्रभू बहुत दिनों-से आप लोप हो गये थे आज इन परीज़ादों से आप-के प्रगट होने का समाचार मिला पर मुझे विश्वास न-आया था अब जाना कि ये सच कहते थे बादशाह ने क्रोध कर कहा कि लश्कर जलद तयार हो झटपट तीस हज़ार परीज़ाद से उस पर चढ़ गया तीन दिन में शहर के पास पहुंच के डेरा किया फिर कई जासूसों से कहा कि मकरनस के समाचार लाओ कि वह कहां है यह सुनते ही वे उड़े एक पल में आके विनती की कि उस जंगल में शिकार खेलता है जब बादशाह सुनते ही तीस हज़ार परीज़ादों से उस पर जा पड़ा-मकरनस के लोग कुछ न कर सके कितने मारे गये-बहुतेरे घायल हुए निदान मकरनस पकड़ा गया जब वह सामने आया तब बादशाह ने कहा कि अरे दुष्ट तू मुझे भूल गया न जाना कि शम्सशाह अभी तक जीता है जो मैं उस के लोगों को पकड़ के क़ैद करूंगा तो बादशाह मुझे जीता न छोड़ेगा अब इसी में कुशल है कि उस मनुष्य को परीज़ाद समेत लादे उस-ने कहा कि मैं उस को उसी समय रखा गया मनुष्य-

को देव कब छोडता है बादशाह ने क्रोध कर के कहा-
कि अरे महा दुष्ट हज़रत सुलैमान ने मनुष्यों के स
ताने को नहीं मना किया था और तुम ने यह बचन न
हीं दिया था कि हम मनुष्यों को न ही सतावेंगे और
न खायँगे उसने कहा कि वह बात हजरत सुलैमान
ही के साथ गई तब बादशाह क्रोध के मारे कांपने
लगा और कहा कि शीघ्र लकड़ीयों का ढेर लगा के
इस महा दुष्ट को साथियों समेत जला दो जब मक-
रनस ने देखा कि अब कुछ बश नहीं चलता और यह
बिन जलाये नहीं रहैगा किसी भांति इस के हाथ से छु
टना चाहिये फिर आगे समझ लिया जायगा यह इसी
सोच में था कि बादशाह ने शांत हो के कहा कि अरे
अन्याई उस मनुष्य पर मेरी बड़ी प्रीति थी जो उसे
जीते जी मुझे देदे तो मेरा तेरा कुछ बैर नहीं अपने
जी में कुछ चिंता न कर नहीं तो मार डालूंगा मकर
नस ने कहा कि जो तुम हजरत सुलैमान की सौगंद
खाओ कि उस मनुष्य को ले के तुझे छोड दूंगा और
कुछ न करूंगा तो अभी उस मनुष्य को परीज़ाद समे
त लादूं शामशाह बादशाह ने कहा कि हमारे तुम्हारे-
बीच में हजरत सुलैमान हैं तुझ से कभी छल न करूं
गा उस ने अपने नौंकरों से कहा कि उस कुए में ए
क मनुष्य परीज़ाद समेत क़ैद है उन को अभी लाओ
वे दौंड़े हातिम को परीज़ाद समेत ले आये बादशा
ह ने हातिम को तख़्त पर बिठा लिया और कहा कि मैं
न कहता था कि राह में मनुष्य दुख दाई बहुत से देव
रहते हैं तुम्हें जीता न छोंडेंगे हातिम बोला जो भाग्य
में है वही होता है सब अवस्था में परमेश्वर का धन्य-

वाद करना चाहिये फिर बादशाह ने हुक़्म दिया कि इस दुष्ट मकरनस को न छोड़ना चाहिये इसी लकड़ियों के ढेर में रख के जला दो कि संसार का उत्पात उठ जाय यह सुनते ही परीजादों ने मकरनस को उस के साथियों समेत उस ढेर में डाल कें आग लगा दी तब वह पुकारा कि तुमने हज़रत सुलैमान को बीच में दे के यही प्रतिग्या की थी बादशाह ने कहा कि अरे छली जब तू हज़रत सुलैमान से प्रतिग्या कर फिर गया परमेश्वर से न डरा मैंने जो तुझ से प्रतिग्या भंग की तौ क्या बुरा किया और तू बड़ा बखेड़िया था तेरा जलाना भला है निदान उसे उस के साथियों समेत जलवा दिया और अपने छोटे भाई को वहां की बादशाहत देकै कहा कि तुम इस देश की रक्षा करो फिर हातिम से कहा कि अब आप का क्या मनोर्थ है उसने कहा कि वही जो मैंने पहिले प्रार्थना की थी बार बार क्या कहना है जो चाहै सो हो मुझे उस टापू में जाके वह मोती लाना है तब बादशाह ने अपने परीजादों से कहा कि तुम में से जो कोई बूढ़ा और चतुर प्रवीन हो इस के साथ जाय और इसे वहां पहुंचा आवै यह सुन के वैसे ही चार परीजादों ने उठ के कहा कि यह काम हम करेंगे यह बात सुन बादशाह ने बड़ी दया कर उन्हें हातिम के साथ बिदा किया वे उसी प्रकार उड़न खटोले पर उसे बिठा के ले उड़े रात दिन चले जाते जब भूखे प्यासे होते तब कहीं सुबिहले की जगह देख उतर पड़ते और कुछ खा पी लेते ऐसे ही परमारे पंद्रह दिन तक चले गये सोलहवें दिन उस पहाड़ पर उतरे जिस पर शाहज़ादे नूमान परम सुंदर परीज़ादने वरज़ख

की बेटी पर आशिक़ हो के अपने रहने की जगह बना के
ढाढें मार मार रो रहा था उस का रोना सुनते ही हातिम
व्याकुल हो पूछने लगा कि इस दुख से कौन रोता है इ
से निश्चय करना चाहिये यह कह के आपही उठ खड़ा
हुआ और उधर चला थोड़ी विलंब में वहां जा पहुंचा
एक सुंदर तरुण परीज़ाद को सिर झुकाये रोते देख कर
पूछा कि तू कौन है और इस जगह किस लिये रोता है
उसने आंख उठा के देखा कि एक परम सुन्दर मनुष्य
खड़ा है तब वह बोला कि अरे मनुष्य तू यहां कहां से-
आया और क्या काम है हातिम ने कहा कि मैं मुर्ग़ा
बी के अंडे समान मोती ढूंढता हुआ यहां आया हूं
क्योंकि ऐसा मोती बरज़ख़ टापू के बादशाह के पास
है यह सुन वह हंस के कहने लगा कि उस मोती का
तेरे हाथ आना कठिन है क्योंकि वह बादशाह एक
बात पूछता है कोई उस का उत्तर नहीं दे सकता ह-
म परीज़ाद होके न बता सके फिर तू मनुष्य हो के कैसे
बतावैगा कि वह मोती कैसे उपजा जब हातिम ने क
हा कि परमेश्वर बड़ा समर्थ है तू अपना वृत्तांत कह
कि ऐसी दसा में क्यों पड़ा है वह परीज़ाद उसास लेके
बोला कि यहां के बादशाह का महरोज़ नाम है एक
दिन मैं अपनी सभा में बैठा था किसी ने उस की बेटी की
सुंदरता बरणन की सुनते ही मैं अपनी देह में न र-
हा और उस टापू में जाके उस के बाप को संदेसा भेजा
उसने अपने पास बुलवा के प्रतिष्ठा पूर्वक बैठाला फि
र उस मोती को मंगवा के मेरे सामने रख दिया और-
पूछा कि यह मोती कौन से समुद्र का है और कैसे उप
जा और कहां से हाथ लगा मैं क्या मेरे बुज़रग भी न जानते

थे इस से मैं कुछ न बता सका अपना सा मुह लेकें र-
ह गया उस ने वहां से बाहिर निकाल दिया उस समय
वह उस की बेटी कोठे पर खडी थी मेरी आंख उस पर
जा पड़ी अधमरा तो पहिले ही था फिर उसे देखने
मरही गया जब मैंने देखा कि कुछ उपाय नही चल-
ता तब निराश हो इस परबत पर आके गिर पडा ला-
ज के मारे अपने देश में न गया अब दिन रात रोते तल
फते कटती है न प्राण निकल ते हैं न प्राण प्यारी मिल
ती है हातिम ने कहा कि तू धीर्य रख जो मोती लूंगा तो
मोती वाली तुझे दूंगा में उस मोती के उपजने का वृ-
त्तांत जानता हूं तू देखैगा कि तेरे सामने कैसा बरणन
करता हूं वह बोला कि मुझे विश्वास नहीं आता तू ब-
का कर हातिम बोला कि वह मोती सीप में नहीं उपजा
ता और उस टापू में पहिले मनुष्य बस्ते और राज्य क
रते थे उठ मेरे साथ चल यह सुन परीजाद ने हातिम-
की बात कुछ सच समझ उठ के साथ हुआ तब वहां-
हातिम ने उन चारों परी जादों से पूछा कि तुम में इतना
बल है कि हम दोनों को खटोले पर बिठा के ले चलो
वे बोले कि जो तुम चार भी हों तो ले जावें यह सुन वे दो
नों खटोले पर जा बैठे और परी ज़ाद ले उडे राह में म
हा काल देव का बाग़ था उस में वह बैठा सैर कर रहा
था और ये उधर जा निकले महा काल की आंख उन
पर जा पडी उसने कई देवों से कहा कि दौड़ कें इन प-
री ज़ादों को खटोले समेत मेरे पास लाओ वे देव उडे
और उन्हें खटोले समेत उस के पास लाये महा काल
ने कहा सच कहो इस मनुष्य को कहां लिये जाते हो-
वे बोले कि शम्सशाह के पास से आते हैं वह बोला-

कि शम्सशाह को लोप ज़ुए बज़ुत दिन बीते उस के दे-
श में सांप बस्ते हैं परीजादों ने कहा तुम सच कहते
हो ऐसा ही था पर अब इस मनुष्य के प्रताप से फिर
वैसा ही हो गया और हमारे सब के पर भी हो गये देव
ने कहा कि अब कहां जाते हो वे बोले कि बरज़ख के
टापू को फिर उसने पूछा कि यह परीज़ाद कौन है।
मेहरआबर आप ही बोला कि अरे महाकाल मुझे भू-
ल गया मैं मेहरआबर शाहज़ादा मेहरबर बादशाह
का बेटा हूं उस ने कहा कि अरे शाहज़ादे तुझे मनुष्य
से क्या काम है अपनी राह ले मैं तुझे कुछ नहीं कहता
क्योंकि परीज़ाद हज़रत सुलैमान के संतान में से है।
यह कहि के हातिम को खटोले से खींच लिया मेहर
आबर बोला कि हजरत सुलैमान से जो प्रतिग्या की
थी उसे भूल गया देख मनुष्य को न सता वह बोला
कि वह समय कहां है कि हम उस बचन पर रहैं इस
को न छोडूंगा बहुत दिन पीछे यह शिकार हाथ लगा
है कुछ मुंह सलौना करूं मेहरआबर ने देखा कि यह
मनुष्य को देख बावला होगया है कुछ छल करना-
चाहिये मेहर आबर बोला कि अरे महाकाल एक म-
नुष्य के खाने से क्या मैं तुझे दस मनुष्य ला दूंगा जो
मेरी बात माने और इसे मुझे दे इस्से मेरा बड़ा काम
होता है देव बोला कि शाहज़ादे मैं तेरे घराने व्योहार
रखता हूं इस को मेरे पास छोड़जा और जो कहता है
सो कर दिखा तो मैं इस को तुझे दे दूं शाहजादे ने देखा
कि कुछ उपाय नहीं चलता तब विवश होके कहा-
कि यह मनुष्य मेरा बड़ा प्यारा है इसे तू बहुत अच्छी-
जगह रख है जो कुछ इसे दुख मिलैगा तो मैं उस का

बदला तुझ से लूंगा उस ने कहा कि जो मकान तुम्हारे
प्रसन्न हो उस में छोड जा उस ने एक बाग में हातिम को
ठहराया और महाकाल से कहा कि तू अपने देवों से
कह दे कि उस की रक्षा अच्छे प्रकार करें मैं दो तीन दि
न में दस मनुष्य तेरे लिये लाता हूं वह बोला बहुत अच्छा
मेहर आबर चारों परीजादों समेत किसी जंगल में आ
के एक जगह बैठ आपस में बिचार करने लगे कि जो
अपने देश में जा के फ़ौज लावें तो बिलंब लगेगी और
अवधि बीत जायगी वह दुष्ट उसे बिन सताये न रहेगा-
अब यह उचित है कि घात में लगे रहें जब देवों को अचे
त पावें तब उस मनुष्य को ले के उड जायें फिर हमें कौन
पाता है निश्चय है कि सबेरे होते होते साठ सत्तर कोस-
निकल जायंगे उन चारों परीजादों ने इस बात को बहुत
प्रसन्न किया और एक ओर घात में लगे रहे चौकी के दे
वों ने मन में बिचारा कि परीजाद इस मनुष्य को क्या
चुरा ले जायंगे और उस के पर नहीं जो आप उड जा-
यगा इस भ्रम से कई देव उन में के शिकार को गये कि
तने पशु पक्षी मार लाये उन्हें भून भून खाके शराब-
पी के उन्मत्त हो आधी रात गये बाग़ का दरवाजा बंद
कर पैर फैला के सो रहे पर यह कोई न सोचा कि मेहर
आबर चार फिर प्रानों समेत प्राण निकालने की घात
में लग रहा है निदान वे परीजाद देवों को अचेत पाके
हातिम को खटोले पर बिठा आकाश की ओर उड
चले सूरज निकलते बाग से सौ कोस पर निकल
गये जब दिन निकला तब एक अच्छी जगह देख
उतर पडे कुछ कलेऊ कर सो रहे देव यह नहीं जानते
थे कि क़ैदी को कोई ले गया निस्संदेह बाहिर बैठे चौकी

दिया किये और वे दिन रात चले गये जहां अच्छी जगह
देखते उतर पड़ते कुछ विश्राम कर हरे ही चल देते ज
व अवधि बीत गई तब महा काल ने कहा कि जिस मनुष्य
को परीजाद छोड़ गये हैं उसे लाओ कई देव उस बाग़
में आये और उस को न पाया महा काल से जा कहा कि
वह मनुष्य यहां नही है वह क्रोध कर आप ही उस बाग़ में
आया तो देखा कि ठीक वह नही है फिर देवों पर झुंझला
के कहा कि अरे विश्वास घातियो तुम्ही ने उसे खा लि-
या देखो तो कैसा स्वाद चखाता हूं यह कहिके कई देवों
से कहा कि उन्हें कैद करके बहुत मारो उन्हों ने सुलैमा
न की सौगंद खा के कहा कि हम ने तो उसे हाथ भी नहीं ल
गाया खाने की तो क्या चरचा है महा काल ने कहा कि-
तुम झूठे हो मुझे विश्वास नहीं आता यहां तो यह बीती
और वे परीजाद हातिम समेत जब कहरमान नदी पर
पहुंचे तो महा काल का एक देव भी उस टापू में गया था
उन्हें पहिचान कें उतर पड़ा चाहता था कि हातिम का-
हाथ पकड़ के उड़ा ले जाऊं वहीं मेहर आवर शाहजा
दे ने ऐसी एक तलवार मारी कि उस का हाथ कंधे से
अलग हो के गिर पड़ा वह यह कहता हुआ भागा कि
अरे परीजादो तुम ने भला किया जो मनुष्य के लिये
मेरे हाथ में तलवार मारी अभी इस पर देके देवों को
जताता हूं कि कई परीजाद एक मनुष्य को लिये जाते
हैं देखो तो कैसा बदला लेता हूं मेहर आवर ने यह सुन
के कहा कि तू किस पर दे का रहने वाला है वह बोला
कि मैं महा काल के देवों में से हूं मेहर आवर ने कहा
कि जा अपने महा काल से कह कि मैं इस मनुष्य को
लिये जाता हूं संभले रहना जब मैं इधर से फिरूंगा तो

तेरे शहर को लूट मार के धूर में मिलाऊंगा यह सुन के वह उडा और परीजाद भी उन को ले उडे इतने में एक जंगल के पास पहुंच के हातिम से कहा कि यहां हमारा देश हो चुका आगे नहीं जा सकते हम को बिदा करो- मेहर आबर बोला कि मैं तेरा साथ न छोडूंगा सब अवस्था में साथ दूंगा हातिम खटोले से उतर पडा और चारों परीजादों को बिदा किया फिर मेहर आबर से कहा कि मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण तुझे क्लेश हो पर इतना जाना चाहता हूं कि इस जंगल में कैसे चल सकूं वह बोला कि आगे तो परी जाद भी उस ओर न जा सकते थे क्यौं कि यहां के देव उन्हें सताते थे यहां तक कि मार डालने की अपेक्षा रखते एक दिन बडा न से परी जाद इकट्ठे हुए देवों से लडे दोनों ओर के हजारों मारे गये मनुष्य दुख दाई थे हातिम ने कहा कि जो मैं देव बन चलूं तो इस जंगल के उस ओर कैसे जाऊं मेहर आबर ने कहा कि सब दिन आकाश में उडता चलूंगा रात को जहां तू उतरैगा मैं भी उतर पडूंगा तब हातिम ने पक्षी का लाल पर निकाल के जलाया और उस की राख घोल के अपने बदन में मली वही देव सा हो गया जंगल के पशु भागने लगे- सब दिन चलता सांझ को जहां रह जाता वहीं मेहर- आबर आ मिलता एक दिन मेहर आबर ने पूछा कि ये पर किस पक्षी के हैं हातिम ने कहा कि ये पर उस पक्षी के हैं जिस्से उस मोती के उपजने और माहयार के हाथ लगने का वृत्तांत सुना है और कहा कि जब मैं शाहाबाद से निकला तब बडी चिंता हुई कि ऐसा मोती किस समुद्र में होता है और मैं कैसे पाऊंगा निदान एक

वृक्ष के नीचे सिर झुका के बैठ गया कि एक सुरंग पक्षी
का जोड़ा भी उस वृक्ष के ऊपर आ बैठा पहिले तो मादा
ने उस जंगल के जल पवन को अपने नर के सामने
बुरा कहा फिर कहरमान नदी का वृत्तांत बरणन क
र के मेरी दसा पूछी कि यह कौन है जो उदास बैठा है
उस ने मेरा और उन मोतियों के उपजने और उन प-
क्षियों का वृत्तांत जिन के ये अंडे हैं बरणन कर अपने
पर मुझे दिये और सब वृत्तांत माहयार सुलेमानी के-
सामने कहूंगा तू सुन ली जो हातिम ने सब वृत्तांत इस
लिये उस्से न कहा कि ऐसा न हो कि यह आगे जा के
अपना काम करले और मैं वैसा ही रह जाऊं निदान
मेहर आबर को संतोष इतनी ही बात के सुन्ने से होग
या कि मेरा काम भी इसी से निकलेगा ये बातें कर
मेहर आबर आकाश को उड़ा हातिम आगे चला रा
त को एक जगह रहते दिन को अपनी अपनी राह चल
ते एक रात की बात है कि सुहावनी सी जगह में दोनों
सो गये इतने में मलूक साज़ के देवों में से एक देव उन
के सरहाने आ पहुंचा देखा कि एक देव और एक परी
जाद पास पास सोते हैं उसने जा के और देवों से कहा
जब वे आये तो देख के आपस में कहने लगे कि इसे
अपने बादशाह के पास ले चला चाहिये उन में से ए
क बोला कि अरे मित्रो इन्हें क्यों सताते हो ये हमारी-
जाति के नहीं न इन्हों ने कुछ अपराध किया किसी-
और परदेके हैं कुछ काम को जाते हैं रात का समय
देख के सो रहे हैं पर परीजाद जगता था उसने उन
की बाते सब सुनी फिर एक देव ने कहा कि इन को जगा
के पूछना चाहिये वरजख के परदे के न हों वही उन में से

एक और बोला कि जो वहीं के हों तो तुम्हें क्या दूसरा बो
ला कि एक दिन मलूक बादशाह कहता था कि बहुत
दिनों से बरज़ख़ के परदे के समाचार नहीं मिले परन्तु
मैं उस का डर नहीं जो ऐसी बात कहता है जो यह बात
कोई बादशाह से कह दे कि यहां सोते थे एक देव और ए
क परीज़ाद किसी परदे के उसे उसने देखके आप को न
जताया उस समय क्या कहोगे और हम सब की क्या
दशा होगी निदान दोनों को जगा दिया हातिम ने देवों
को देख उन्ही की बोली में कहा कि तुम ने हमें क्यों ज
गाया क्या काम है वे बोले सच कहो तुम किस परदे के हो
हातिम बोला तुम ने नहीं सुना कि एक मनुष्य बरज़ख़
के टापू को जाता है उस के लिये शम्स शाह बादशाह ने
मकरनस को जला दिया और उसका देश छीन लिया
तुम्हें चाहिये कि उसे ढूंढके अपने बादशाह के पास ले
जाओ फिर देवों ने पूछा कि यह परीज़ाद किस परदे का
है हातिम बोला कि ये तूमान परदे का है यही समाचार
लिये जाता है कि शम्स शाह बादशाह प्रगट हुआ मक
रनस को मारके उस का देश ले लिया यह सुन दे बोले
कि तुम आराम करो हम उसे ढूंढते हैं निदान उसे रस्ता
बता आप चल दिये तीन दिन बीते एक बहुत बड़ी नदी
पर पहुंचे मेहरआबर ने कहा कि क़हरमान नदी यही है
हातिम ने देखा कि इस का दूसरा किनारा नहीं देख प
ड़ता और लहरें आकाश तक पहुंचती हैं जलजीव हाथी
ऊंट घोड़े बैल घड़ियाल मगर उधर के किनारे पर बहुत
से लोट रहे हैं और सब भांति के पक्षी हाथी से भी बड़े
बड़े फिरते हैं और हजारों अच्छे अच्छे रंग के पक्षी पहा
ड़ों टापुओं पर कलोल कर रहे हैं हातिम ने परमेश्वर की

यह रचना देख मन में कहा कि सत्य है कि बुद्धि की क्या
गति जो उस की रचना का पार पावै और अनुमान का कि
तना प्रमाण जो उस का भेद समझै फिर घबरा के मेहर-
आवर से कहने लगा कि भाई इस नदी के पार कैसे जास
केंगे और उस के लहरों की चोटें हम ऐसे निर्बल कैसे-
सहैंगे मेहर आवर बोला कि सत्य है कि बडे उडने वाले
पक्षी की भी सामर्थ्य नहीं कि सात दिन में भी उस के पा
र पहुंचे में परी ज़ाद हो के यह साहस नहीं कर सकता ने
री बात तो सत्य है यह सुन हातिम बोला कि कुछ हो मुझे
वरज़ख के टापू में जाना तब वह बोला कि कुछ दिन य
हां ठहरो तो मैं इस से उतरने का उपाय करूं उस ने-
कहा बहुत अच्छा फिर मेहर आवर ने कहा कि यहां से
कई कोस पर बदरान परदा है वहां का राज्य शम्सान
परीजाद करता है उस के पास बहुत अच्छे दरियाई घोडे
तैराक उडने वाले हैं मेरा मनोर्थ है कि उस के पास जाके
दो घोडे लाओ हातिम बोला कि सिद्ध करो वह वहीं उडग
या और रात बसे वहां जा पहुंचा उस बादशाह से मिला
उस ने पूछा कि आप के आने का क्या कारण है कहो मे-
हर आवर बोला कि मुझे दो घोडे चाहिये जो दो तो बडी-
कृपा है उसने फिर पूछा कि तुम कहां से आये हो उसने
कहा तूमान परदे से बादशाह बोला मैं तुझे पहिचान
ता हूं कि तू मेहर आवर तूमान का शाहज़ादा है अके-
ले आने का क्या कारण वह बोला सच कहते हो पर मैं
एक आपदा में फंसा हूं इस से विवश हो अकेला आया
इतनी सहाय करो तो मैं जीते जी तुम्हारा गुण मानूंगा
शम्सान उठ के मिला और अपने तबेले में लाया कि
ये सब घोडे लीजिये वह दो घोडे ले पल भर में आके

कहा कि उठो चलो हातिम एक घोडे पर चढ बैठा दूसरे
पर मेहर आवर चढके बोला कि बाग न छोड दीजो उ
ठाये रहियो वे दोनों को कड़का उड गये कई दिन पीछे
भूख प्यास से व्याकुल हुए मेहर आवर बोला कि मेरे
पास थोड़ा सा मेवा और एक पानी की सुराही है चाहो
खा पी लो हातिम ने दो चार दाने मेवे के खा दो तीन घूं
ट पानी पिया कुछ एक बल पाया फिर संभल बैठा कु
छ दिन में किनारा देख पड़ा परीजाद बोला कि भाई अ
ब बाग डाल दो घोडे धरती पर उतर पडे हातिम ने क
हा कि मैंने सुना है कि बरजख टापू जल के बीच में है
वह बोला कि इस टापू का किनारा यहीं से है जहां हम
तुम बैठे हैं यह न समझो कि कहरमान से पार होग
ये यह उस का दूसरा किनारा नहीं यह भी एक टापू
है इस में कई टापू और बसते हैं हातिम ने पूछा कि
वह शहर यहां से कितनी दूर है वह बोला कि दश-
दिन की राह पर हातिम बोला कि फिर क्यों बैठे हो च
लो चलो मेहर आवर ने कहा कि एक बात कहूं जो तु
म मानो हातिम बोला सिर आंख से तब मेहर आव
र बोला कि मेरा देश यहां से थोड़ी दूर पर है चाहता हूं
कि वहां जा के लश्कर लाऊं और हम तुम चमत्कार
से शहर में चलें हातिम ने कहा कि हम माहयार सु
लैमानी से लड़ने नहीं जाते जो लश्कर चाहिये यह
सुन वह बोला कि मैं इसलिये कहता हूं कि जो ऐसी दु
र्दसा से चलेंगे तो कौन हमारे आने का समाचार-
बादशाह से कहैगा और ठाठ सामान से जायंगे तो-
हमारे पहुंचने से पहिले ही उस को समाचार पहुंच
जायगा तुम घबराना मत मैं सात दिन में आ पहुंच

ता हूं हातिम बोला कि मैं यहां अकेला रहूं वह बोला-
कुछ चिंता नहीं क्यौंकि यहां कोई दुष्ट दुख दाई नाम को
भी नहीं हातिम बोला कि परमेश्वर रक्षक है सिधारिये
मेहर आवर वहीं से उड़ा जब हातिम की दृष्टि से लोप
हो गया तब हातिम ने उजले पर जलाये उन की राख-
बदन पर मली जैसा था वैसा ही हो गया फिर तीर कमान
ले कैं उठा एक बारह सिंघा शिकार कर लाया चकम
क से आग झाड़ उस के मांस के कबाब बना के खाये
और पानी पी परमेश्वर का धन्य वाद किया फिर सो रहा
ऐसे कई दिन बीते एक दिन जंगल में सैर करता फिर
ता था कि एक बाग़ का दरवाजा खुला हुआ दिखाई दि
या उस में जा के देखा कि भांति भांति के फूलों और मेवों
के वृक्ष फूल फल रहे हैं बहुत प्रसन्न हो वहीं रहने ल
गा घोड़ा भी ऐसा था कि दिन भर जल के तीर चरा क
रता रात को वहीं आ रहता इसी भांति सात दिन बीत गये
और मेहर आवर जो अपने टापू में पहुंचा परीजादों-
ने पहिचान कें पैरों पर गिर बलायें लीं मेहर आवर श
हजादा कितनों की कुशल छेम पूछ कितनों को गले ल
गा अपने मा बाप के पास गया प्रणाम कर पैरों पर
गिरा उन्हों ने छाती से लगा के पूछा कि तू तो लाश ल
श्कर समेत बरज़ख के टापू को गया था फिर लश
कर छोड़ कोने में छिप रहा कि फ़ौज तुझे ढूंढती हुई ति
तर बितर हो गई बहुत दिन ढूंढा कि निदान हार मान
फिर आई भला कहो तो कि तेरा मनोर्थ पूरा हुआ-
माहयार सुलैमानी की बेटी हाथ लगी उस ने सिर झुका
के कहा कि मैंने जो आप का कहना न माना तो बरसों
क्लेश सहे और रोते पीटते दिन काटे यहां तक कि देह की

भी सुधि न थी परमेश्वर ऐसी दसा महा पापी की भी न-
करै पर भाग्य अच्छे थे कि यमन का रहने वाला हातिम
नामी एक मनुष्य उस मोती के खोज में जो मुरग़ाबी के
अंडे समान है आनिकला अनायास मुझे मिल गया मैं-
ने उस्से अपना वृत्तांत कहा उसने मुझे बचन दिया कि
जब वह मोती मेरे हाथ लगेगा माहयार सुलैमानी की बे
टी तुझे दे दूंगा यह बात सुन उस की मा हंस पड़ी और क
हने लगी कि अभी तक तेरा लडकापन न गया परीज़ाद
तो उस का भेद न बतासके मनुष्य की क्या गति जो उस
का वृत्तांत बरणन करैगा और माहयार सुलैमानी से पा
र पावेगा उस ने फिर बिनती की कि वह मनुष्य ऐसा वैसा
नहीं वह भी यमन का बादशाहज़ादा है और बिद्या गुन
में जिन्न परी से भी अधिक है एक पक्षी के जोडे ने उ-
स मोती का वृत्तांत यथार्थ उस्से बरणन किया है मैंने
जैसा माहयार सुलैमानी के मुह से सुना था उसने भी
मेरे सामने वैसा ही बरणन किया तब मुझे निश्चय हुआ
कि उस मोती का वृत्तांत वह ठीक ठीक जानता है अब मैं
उसे बरज़ख टापू के समीप छोड आया हूं अद्भुत मनु
ष्य है कि देव और परी की भी बोली जानता है उन्हों ने
पूछा कि अब तेरा अभिप्राय क्या है उसने कहा कि मे
रा यह मनोर्थ है कि लाव लश्कर साथ लेके बादशा
हों के साज़ सामान से पूरब में जाऊं बादशाह ने यह
सुनते ही कई हज़ार परीज़ाद सवारी के असबाब समे
त साथ कर दिये उसी घडी शाहज़ादा वहां से चल कर
अपनी बात पर वहां जा पहुंचा लश्कर नदी तीर छो
ड हातिम के मकान पर आया तो उसे न पाया अचंभे
में हुआ कि उस ने कैसी प्रतिग्या भंग की जो पहिले चला

गया इतने में हातिम के घोड़े को चरते देख के पहिचा- ना कि वही घोड़ा है फिर परीजादों से कहा कि उस बा- ग़ में ढूंढो वे सब उस बाग़ में आके ढूंढने लगे इतने में एक परीज़ाद ने देखा कि एक सुंदर मनुष्य वृक्ष के नी- चे बैठा तमाशा देख रहा है वह उलटे पैरों फिरा और य- ह वृत्तांत शाहज़ादे से कहा कि मैं एक मनुष्य को बैठा दे- ख आया हूं परमेश्वर जाने वही है वा और कोई बादशा- हज़ादा उठ खड़ा हुआ और पैर उठाये वहां चला गया दे- खा कि हातिम सिर झुकाये चिंता में बैठा है पुकारा कि अ- रे भाई सिर उठा किस सोच में है हातिम ने सिर उठा के देखा तो मेहर आवर है उठ के गले लगाया फिर दोनों बाग से बाहिर आये हातिम ने देखा कि बहुत बड़ा ल- श्कर उतरा है और बादशाहों का सा डेरा खड़ा है- हातिम ने पूछा कि यह लश्कर और डेरा किसका है वह बोला कि आप ही का फिर वह उस का हाथ पकड़- सिरापर्दे में ले गया और जड़ाऊ तख़्त पर बैठाला फि- र खाना मंगवाया हातिम ने बहुत दिनों में जो भांति भांति के खाने देखे बड़ी रुचि से खाये फिर नाच होने लगा- सारी रात आनंद में बीती प्रातःकाल कूंच का नक़्क़ारा बजा के सवार हुए यह समाचार ज़रख़्वाह के बाद- शाह को पहुंचा कि परीजादों का बड़ा लश्कर समीप आ पहुंचा पर उन के आने का अभिप्राय नहीं मिला उ- स ने क्रोध कर एक सिरदार से कहा कि कई हज़ार परीज़ाद साथ ले के तू जा और उन की राह रोक कि- आगे न आने पावें वह लश्कर समेत राह रोक के पड़ा फिर तीन दिन में मेहर आवर का लश्कर वहां पहुंचा तो देखा कि एक बड़ा लश्कर राह रोके पड़ा है-

इतने में समाचार पहुंचा कि माहयार सुलैमानी ने तुमसे लड़ने को फ़ौज भेजी है मेहर आवर ने एक बड़े प्रवीन को उस फ़ौज के सिरदार पास भेजा कि हम लड़ने के लिये नहीं आये बादशाह से मिलने का अभिलाष है उसने यह सुन कहला भेजा कि आप सुख से यहां डेरा करें बादशाह से मिलाप हो जायगा और अपने बादशाह को यही आशय लिख भेजा बादशाह ने आग्या की कि जो उन का यह मनोर्थ है तो बड़ी प्रतिष्ठा से अपने साथ लाके बहुत अच्छे स्वच्छ मकान में ठहराओ निदान हातिम और मेहर आवर कई मंत्री और थोड़े से लोगों को साथ ले शहर में आये लशकर को शहर के समीप किसी बाग़ में रहने का हुक्म दिया फिर माहयार सुलैमानी ने एक अमीर को मेहर आवर के पास भेजा कि अब किस लिये यहां आये हैं उसने कहा कि यमन के बादशाहज़ादे को आप के चरण दरशन का बड़ा अभिलाष है मैं उसे लाया हूं वह बहुत चतुर और सुंदर है आप देख के प्रसन्न होंगे यह सुन बादशाह ने पहिले खाना भेजा दूसरे दिन हातिम को बुलवा के जड़ाऊ कुरसी पर बैठाल बड़े आदर से पूछा कि इस देश में आप किस मनोर्थ से आये हैं और यहां तक कैसे आ पहुंचे हातिम बोला कि परमेश्वर बड़ा समर्थ है उसने पहुंचाया फिर मोती का नमूना जो हुस्नबानू ने उसे दिया था उसके आगे रख के कहा कि इस की जोड़ी का मोती आप दें तो बड़ी कृपा है बादशाह ने कहा कि इस की जोड़ी का मोती कहां से मिले हातिम बोला मैंने सुना है कि आप के यहां है जो दीजिये तो मेरा मनोर्थ सफल होय बादशाह ने कहा कि जो तू मेरी बात पूरी करै तो मोती

के साथ अपनी बेटी भी दे दूं हातिम ने सिर नीचा कर लि
या एक क्षण में सिर उठा के बोला कि मुझे मोती ही चा
हिये बेटी आप जिसे चाहें उसे दें बादशाह ने कहा कि
जब तू मोती के उपजने का वृत्तांत कहि देगा मैं मोती
और बेटी तुझे सौंप दूंगा तू जिसे चाहै उसे देना हातिम
ने यह सुन विनती की कि मेहर आवर को बुलवा लीजिये
उसने उसे बुलवा गले लगा एक कुरसी पर उसे भी बि-
ठाया तब हातिम ने उस मोती के उपजने के वृत्तांत कह-
ने का प्रारंभ किया और माहयार सुलैमानी सिर नीचा
कर सुन्ने लगा निदान जो कुछ उस पक्षी से सुना था आ
दि से अंत तक कह सुनाया तब बादशाह हातिम को
सराहि के उठ खडा हुआ और महल्ल में जा के मोती
ले आया और बोला कि बादशाहजादी को दुल्हिन ब
नावें और व्याह की तय्यारी करें हातिम मोती देख ब
हुत प्रसन्न हुआ फिर बहुत से हाथी घोडे जड़ाऊ सा-
ज से सजवा कर मँगवाये और बादशाहजादी को
सिंगार कर बहुत दासी दास उत्तम वस्त्र आभूषण स-
मेत सभा में बुलवाया हातिम उसे देखते ही बोल उठा
कि यह मेरी बहिन है इसे मैंने मेहर आवर बादशाह
ज़ादे को दिया यह उसी के योग्य है आप अपनी कुल
रीति से उन दोनों का व्याह कर दो और मोती मुझे दी-
जिये कि मैं जा के हुस्न बानू को दूं बादशाह ने आनन्द
सभा बना बेटी को अपनी कुल रीति से मेहर आवर के
साथ व्याह दिया परमेश्वर की कृपा से मेहर आवर का
मनोर्थ पूर्ण हुआ एक महीना बीतें दोनों बादशाहजा
दे शाहजादी सहित बादशाह से बिदा हो कुछ दिन में
उसी नदी के तीर फिर आये हातिम ने कहा कि भाई यहां

से तुम अपने देश को सिधारो मैं अपने शहर को जाता हूं मेहर आवर बोला कि भाई जान यह बहुत अनुचित है जो ऐसी भय कारी जगह में तुझे अकेला छोडूं और आप इस चमत्कार से घर को मेरा यह मनोर्थ है कि इसी ऐश्वर्य से तुझे शम्स शाह बादशाह तक पहुंचाऊं और आप भी उस्से मिलूं फिर अपने लश्कर को आज्ञा की कि शीघ्र चलने का उपाय करके स्त्रियों सहित पार उतरै यह कहि के हातिम और आप घोड़ों पर चढ़ के चल दिये कई दिन में कहरमान से पार हो के एक जंगल में उतरे देवों को समाचार पहुंचा कि परीजादों का एक लश्कर आया है वे इकट्ठे हो के राह रोक के आ पडे मेहर आवर ने एक परीजाद को भेजा कि हम तुम दोनों हज़रत सुलैमान के सेवक हैं हमारा मनोर्थ तुम से बिगाड़ का नहीं है तुम ने हमारा सामना क्यों किया हम तो शम्स शाह बादशाह को हर्ष बाद देने जाते हैं क्योंकि वह बहुत दिनों में परमेश्वर के क्रोध से छूटा है उन्हों ने कहला भेजा कि हमारा भी मनोर्थ तुम से लडने का नहीं केवल मिलने के लिये आये हैं मेहर आवर ने उन को बुला के भांति भांति के रत्न खिला पिला विदा किया हातिम को एक कोने में छिपा रक्खा था कुछ दिन में देवों की राज्य से निकल गये तब शम्स शाह बादशाह ने सुना कि हातिम और मेहर आवर मेरे मिलने को आते हैं यह सुन वह भी अपने लश्कर समेत उन को लेने चला राह में प्रसन्न हो हो मिले हातिम ने अपना और मेहर आवर का वृत्तान्त वर्णन किया यह सुन शम्स शाह ने मेहर आवर से बड़ी दीनता कर कहा कि यह तुम्हारी दया का भार मुझ पर है जो हातिम को कुशल क्षेम से मुझ तक पहुंचाया परमे

श्वर को धन्य है कि अपनी कृपा और तुम्हारे प्रताप से इस-
को जीता जागता मुझे मिलाया फिर मेहर आवर को एक बा
ग में उतारा चालीस दिन तक हर्ष आनंद नृत्य गान की
सभा रही और महिमानी के सब प्रकार संपूर्ण किये इक
तालीसवें दिन मेहर आवर और हातिम तब शम्स शाह
से विदा हो अपने देश को चला जब शम्स शाह ने हाति-
म से कहा कि आप ने मार्ग का परिश्रम बहुत उठाया औ
र आप का देश अभी बहुत दूर है पर आप धीर्य करें मैं
आप को आप के देश में बहुत शीघ्र पहुंचा देता हूं यह
कहि परीजादों से कहा कि हातिम को उडन खटो ले पर-
बिठा अभी यमन में पहुंचा दो हातिम ने कहा कि मुझे
अभी यमन से कुछ काम नहीं शाहाबाद जाया चाहता हूं
उस ने कहा कि वहीं पहुंचा दो परीजादों ने उसी घडी हा
तिम को उडन खटो ले पर बिठा शाहाबाद का रस्ता लिया
रात दिन चले जाते जब थक जाते तब किसी अच्छी जगह
उतर पडते थोडा आराम कर फिर उडते एक महीने में
शाहाबाद के पास जा पहुंचे हातिम ने अपनी रसीद-
लिख परीजादों को बिदा किया और आप शहर में
आया लोगों ने हुस्नबानू से जा कहा कि हातिम फिर
जीना जागता कुशल क्षेम से आ पहुंचा उस ने वैसे-
ही परदा कर भीतर बुला लिया और सोने की कुरसी-
पर बिठाया हातिम कुछ न बोला बैठते ही उस मोती को
बटुये से निकाल सब को दिखा फिर उस में रख लिया-
और सब वृत्तांत बरणन किया फिर निकाल के हुस्न-
बानू को दिया वह बहुत प्रसन्न हुई और हातिम के सा
हस की बडी बडाई की इतने में हातिम उस से बिदा हो-
सराय में आ के मुनीरशामी से मिला अपना सब वृत्तान्त

कह सुनाया फिर उस का हाथ अपने हाथ में लेकें कहने लगा कि ले अब प्रसन्न हो प्यारी के मिलाप का दिन आ पहुंचा एक बात रह गई है परमेश्वर की कृपा से उसे भी पूरी करता हूं मुनीरशामी यह सुन सहसा उस के परों पर गिर पड़ा उसने उठा के गले लगा लिया दोनों सात दिन तक एक साथ रहे जब हातिम ने देखा कि बदन की मांदगी सब की सब जाती रही तब आठवें दिन कपड़े बदल हुस्नबानू के दरवाजे आया चोबदारों ने जा जताया उसने वैसे ही बुला के जड़ाऊ कुरसी पर बिठाया हातिम ने कहा कि अब सातवीं बात वरणन कीजिये जब हुस्नबानू बोली कि हम्माम बादगर्द का समाचार लाओ क्यों कि हम्माम को फिरने से क्या काम मैंने सुना है कि वह चक्की सा फिरता है फिर उस में लोग कैसे नहाते हैं - आ के उसे और उस का कारण देख आओ जब हातिम ने पूछा कि इतना तुम जानती हो किधर है हुस्नबानू बोली कि दक्षिण और पश्चिम के कोने में सुना है पर उस के बनने का वृत्तान्त नहीं सुना और यह भी नहीं जानती कि किस परदे में है यह सुनते ही हातिम हुस्नबानू से बिदा हुआ और सराय में आके मुनीरशामी को बहुत सा धीर्य देकर कहा कि परमेश्वर की कृपा से यह बिदेश कर आऊं तो तेरी प्यारी को तुझ से मिलाऊं और अपनी बात से सच्चा होंउ यह कहि के मुनीरशामी से बिदा हुआ ॥+॥ +॥

सातवीं कहानी में हम्माम बादगर्द के समाचार लाने और हुस्नबानू का मुनीरशामी के साथ ब्याहे जाने और हातिम का अपने घर आने का वरणन है

हातिम ने शहर निकल जंगल की राह ली कुछ दि न बीते एक शहर के पास जा पहुंचा तो क्या देखा कि- एक कुए के चारों ओर बहुत से स्त्री पुरुष इकट्ठे हैं हा तिम ने पूछा कि ऐसी भीड और धूम क्यों कर रक्खी है किसी ने कहा कि यहां के रईस का बेटा बावला हो के इस कुए पर बैठ रहा था आज तीसरा दिन है कि कुए में गिर पडा रस्सियां और कांटे डाल के अपना सा ढूंढते हैं पर उस की लाश नहीं मिलती न जानिये कि उस से क्या व्याधि थी जो उसे पाताल में ले गई पानी ही में पडा हो पर कोई प्राणभय से उतरता नहीं कि कोई अजगर न हो जो निगल जाय ये बातें हो रही थीं कि उ स के मा बाप सिर पीटते छाती कूटते वहां आ पहुंचे और कुए पर बैठ ऐसे दुख से रोये कि पशु पक्षी भी चिल्ला ने लगे और पत्थर भी पानी हो गये यह दसा देख हा तिम का भी जी घबराने लगा आंखों में आंसू भर भ- रोसा दिया कि परमेश्वर की इच्छा से कुछ बश नहीं सं तोष करना चाहिये वे बोले कि तुम सच कहते हो पर जो लाश भी मिले तो उसे गाड के उस की कबर देख अपने व्याकुल मन को थोडा बहुत धीर्य देवें क्योंकि मरे का इतना ही चिन्ह बहुत है एक एक की बिनती कर हजारों रुपये देते हैं पर कोई हमारी दुर्दसा पर दया- नहीं करता और कुए में नहीं उतरता आज हमारा य ह विचार है कि आप उतर के उस की लाश निकालें दूस रे की क्या पडी है जो पराये लिये अपने प्राण की बाधा में पडै यह सुन के हातिम बोला कि तुम धीर्य रक्खो मैं प रमेश्वर के मार्ग में अपना सिर हाथ में धरे फिरता हूं मे रा यही अभिलाष है कि मेरे प्राण किसी के काम आवें-

ईश्वर हेत कुए में जा के तुम्हारे बेटे की लाश ढूंढ के लाता
हूं तुम मेरे आने तक यहीं रहियो उन्हों ने कहा कि जाने
की तो कौन बात है हम दिन रात यहीं बने रहेंगे हाति
म बोला कि एक महीने तक मेरी राह देखना जो आया
तो भला नहीं तो अपना काम काज करने लगना इत
नी बात कहि कुए में कूद पड़ा कई गोते खा के पैर ध-
रती पर जा लगे आंखें खोल दीं न कुआ देख पड़ा न पा
नी पर एक बहुत लंबी चौड़ी जगह दिखाई दी आगे च
ला तो एक बाग़ परम रमणीक दरवाज़ा खुला हुआ दे-
खा उस के भीतर गया तो भांति भांति के वृक्ष अति मनो
हर फूलों मेवों से लदे हुए देखे और वह बाग सुगंध से ऐ
सा महक रहा था कि हातिम का जी प्रसन्न हो गया जी मे
कहा कि ऐसा बाग़ किन उदार चित्तों का है इस के जान
ने के लिये सारे बाग में फिरता था कि एक जगह बहुत
सी परियां दिखाई दीं और एक जड़ाऊ तखत पर एक
परम सुंदर तरुण मनुष्य देखा तब हातिम थोड़ी दूर-
बढ़के घने वृक्षों में छिप रहा और तमाशा देखने लगा
इतने में परियों की दृष्टि उस पर जा पड़ी वे सहसा ची
खें मारने लगीं कि हैं हैं यह अनजानता मनुष्य कहां
से आया फिर अपनी सिरदार से जा कहा कि एक म
नुष्य उन वृक्षों में छिपा खड़ा है यह सुनते ही उस परी
ने उस मनुष्य से कहा कि तुम्हारा भाई बंद एक और भी
आ पहुंचा जो कहो तो तुम्हारे पास लावें और उस की
सेवा सुश्रूसा करें वह बोला बहुत अच्छा मैं भी चाह-
ता था कि कोई मेरी जाति वाला मिले सो परमेश्वर ने
भेज दिया उस परी ने अपनी दो सहेलियों से कहा कि
तुम जा के उन्हें प्रतिष्ठा पूर्वक लाओ वे उसे उसी भांति स

लाई जब हातिम तखत के पास पहुंचा तब परी और
मनुष्य ने उठ खडे हो अपने पास बिठा लिया और बडा
आदर सन्मान किया फिर पूछा कि तुम कौन हो तुम्हा
रा नाम क्या है कहां से आये हो हातिम बोला कि यम
न का रहने वाला हूं शाहाबाद से आया हम्माम बादग
र्द को जाता हूं मेरा नाम हातिम है अनायास इस कुए
पर आ निकला था बहुत से लोग रोते हुए देखे तेरे मा-
बाप की दसा देख मैं व्याकुल हो गया सहसा उन के
पास जा के पूछा कि तुम ऐसा क्यों बिलख रहे हो कि
सुन्ने वालों की छातियां फटती हैं वे कराह कें बोले कि
इस कुए में हमारा बेटा गिर पडा है इस्से हमारा जी न
लफ़ता है कोई ऐसा नहीं कि परमेश्वर हेत उस की-
लाश निकाल लावै जब मैंने ये बातें सुनी तब सहसा
इस कुए में कूद पडा और यहां तक आ पहुंचा मैं नहीं
जानता कि उस का बेटा तू ही है वा और कोई पर एक
मनुष्य देखता हूं यह सुन वह बोला कि भाई वे स्त्री पु
रुष जो वहां थे मैं उन का बेटा हूं एक दिन की बात है
कि उस कुए पर आ निकला वहां यह परम सुंदरी स-
सि बदनी मुझै देख पडी उसी दम उस की छवि पर धिन
दामों बिक गया और उस की चाह में बावला हो वहीं बै
ठ रहा और यह चपल चपला सी नित झलक दिखाजा
ती थी पर मुझै उस देखा भाली से संतोष नहीं होता था
निदान इस की प्रीति ने मुझै खींच के गिरा दिया फिर पव
न के प्रकार इस सुंदरता के फूल को ढूंढता फिरता इस बा
ग़ में आ पहुंचा इस ने मुझै दुखी देख बडी कृपा की और
मुझ मिलाप के प्यासे को अपने समागम के अमृत से
पूर्ण कर दिया अब दिन सुख से बीतता और रात आनंद

में कटती है हातिम ने कहा कि बडा सोच है कि तू तो-
यहां आनंद मनावै और वहां तेरे मा बाप तेरे लिये सिर
पीटें यह कौनसा न्याय है वह बोला कि मुझ विवश का
क्या वश है जो वह जाने दे तो जा कें उन का संतोष कर
आऊं हातिम ने कहा तू धीर्य कर में उस्से अभी कह
ता हूं यह कहि परी से कहने लगा कि अरी सर्वांग सुं
दरी यह दया बानी के अयोग्य है कि उस के मा बाप
पुत्र की वियोग अग्नि में जला करें इस लिये इसे दो ती
न दिन की विदा दे जो यह जा के अपने मा बाप का जी
ठंढा कर आवै यह सुन वह बोली कि उसे कौन रोक
ता है अभी चला जाय इसे क्या मैंने बुलाया है यह आ
पही आया है जहां चाहे वहां चला जाय यह सुन हा-
तिम ने कहा कि उठ खडा हो परी ने परवानगी दी वह
बोला कि यह परवानगी नहीं है यह तर्क है प्रसन्नता
से बिदा करना यह है कि मुझ से प्रतिज्ञा करे कि तू नि:
संदेह अपने घर जा में अठवारे में दो तीन वार रात-
भर के लिये जाऊंगी और तुझे अपने मन से न भुला
ऊंगी यह सुन हातिम ने सिर नीचा कर लिया थोडी
विलम्ब में परी से फिर कहा कि परमेश्वर के लिये द-
या करके जो यह कहता है सो मान ले वह त्यौर च
ढा के बोली कि हमारी जाति में यह चाल नहीं मैं नहीं
कर सकती या के चोचले मुझे नहीं भाते बहुत बातें ब
नाना चिढ़ है अब अधिक बातें न बनाइये हातिम ने
कहा कि जो इस विवश पर दया करो तो में कुछ विन
ती करूं मैंने और और परदे की परियों को देखा सु-
ना है और उन से मिलाप भी हुआ और उन की प्री-
ति प्यार अपने चाहने वालों पर बहुत अधिक देखी पर

तुम कहती हो मैं कैसे मानो मनुष्य तो अपनी बात नहीं नि
वाहने और साथ नहीं देते पर परियां बात निबाहने और
साथ देने में प्रसिद्ध हैं यह सुन उसने मुंह फेर लिया और
कहा कि यह झूठा है लपाटिया मुझे जी से नहीं चाहता यह
सब तेरी बनावट है वह मनुष्य बोला कि जो तुम कहो सो
सच है इस समझ पर बार बार जाइये मैंने तुम्हारे लिये घ
र बार छोड़ प्राण से हाथ धो इ कुए में गिरा और कैसे कै-
से दुख सहि के यहां तक पहुंचा तिस पर भी चाहने वाला
न ठहरा यह सुन परी बोली कि ऐसी बातें बहुत सुनी हैं तू
क्या बक रहा है तब मैं जानूं कि तू मुझे चाहता है जो मैं क
हूं सो करै यह सुन वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा
कि बिलम्ब क्यों करती हो जो मन में हो सो झटपट कहि
दो उसने अपने लोगों से कहा कि एक कराह में घी भ
र के चूल्हे पर चढ़ा दो जब घी कड़ कड़ावे तब मुझ से कहो
उन्हों ने वैसा ही किया जब घी खौलने लगा तब परी उ
स मनुष्य का हाथ पकड़ कहने लगी कि जो तू मुझे चा
हता है तो इस में कूद पड़ उसने प्रसन्नता पूर्वक सह
सा उस में कूदने लगा परी घबरा के बावली सी दौड़ प-
ड़ी और उस के गले से लिपट गई फिर कहा कि तू स-
च्चा चाहने वाला है यह मुझे निश्चय हुआ अब जो कहै
सो करूं मुझे सब अंगीकार है फिर अपनी सहेलियों से
कहा कि आनंद सभा बनाओ उस के कहिते ही परम
रसीली रंगीली कांता जड़ाऊ सुथरी सुथरी गुलाबि
यों में रंग रंग की शराबैं लाईं और भांति भांति के खाने
आये और नाच रंग होने लगा ऐसे ही सुख चैन के आ
नंद में एक महीना बीत गया और वहां जो लोग कुए पर
बैठे दिन गिन रहे थे कहने लगे कि जो वह आज भी न

निकला तो अपने अपने घर चले आयंगे इकतीसवें दिन
हातिम ने उठ के परी से कहा कि मुझे और भी आवश्यक
काम है अब मैं नहीं रह सकता तुम अपना वचन पूरा-
करो परी बोली बहुत अच्छा हातिम ने कहा कि जो तुम
दृढ प्रतिग्या करो और हज़रत सुलेमान की सौगंद खा
वै तो मुझे विश्वास आवे उस ने सौगंद खा के कहा कि
तुम सुचित्त रहो मैं अपने बचन से कभी न फिरंगी-
तब अपनी परियों से बोली कि तुम इन दोनों को उसी
कुए पर पहुंचा दो उन्हों ने एक ही उडान में दोनों को कु
ए पर पहुंचा दिया सब लोग देख के अचम्भे में हुए औ
र उस के मा बाप दौड़ के हातिम के पैरों पर गिर पडे औ
र बडे आनंद से शहर में आये और बहुत अच्छा स्वादि
ष्ट खाना पीना और नाच रंग होने लगा घर घर बधाये
बजे चौदह दिन हातिम वहां रहा और परी भी अपनी
बात पर आने लगी और नियम बांध लिया उस की स
चाई देख हातिम ने अपने जी में कहा कि धन्य इस को
कि रूप भी अच्छा और सभाव भी सच्चा वह रूपवान
सुंदर नहीं जो बात न निबा है और वह आरथ मनोहर
नहीं जिस में लाज न हो निदान पंद्रह वें दिन हातिम
वहां से बिदा हो जंगल को चला रईस का बेटा उसे श-
हर के बाहिर तक पहुंचा गया बहुत दिनों में चलते च
लते एक बस्ती देख पडी उस के बाहिर एक बृद्ध मनुष्य
खड़ा था उस ने हातिम को देख के कहा कि सलाम-
प्यारे तुम भले मिले हातिम बोला कि सलाम फिर वह
बोला कि अरे बटोही जो आज की रात मेरे घर चल कें
रूखा सूखा भोजन अंगी कार करो तो बडी कृपा है हा-
तिम बोला कि भलाई का क्या पूछना उसी क्षण वह हातिम

को अपने घर ले आया और बडे आदर सन्मान से-
स्वच्छ पवित्र खाना खिला के पूछा कि तुम्हारा क्या ना
म है और कहां के रहने वाले हो और कहां जाउगे उ-
सने कहा कि मेरा नाम हातिम है यमन का रहनेवा
ला हूं हम्माम बादगर्द के समाचार लेने जाता हूं यह
सुन तेही उसने सिर नीचा कर लिया फिर सिर उठाके
बोला कि वह कौन तेरा वैरी था जिसने तुझे ऐसी जग
ह भेजा पहिले तो उस का पता नहीं दूसरे जो वहां ग-
या सो फिर न फिरा जो कोई वहां जाने का मनोर्थ करै
वह अपने प्राण से हाथ धोवै और जीतें जी मृतक -
स्नान करै क्योंकि उसका रस्ता पहिले विश्राम से घट
ती नही और रस्ते में कतान शहर के बादशाह ने चौकी
बैठाई है कि जो कोई हम्माम बादगर्द को जाया चाहै उसे
पहिले मेरे पास लाओ न जानिये उस को अपने सा
मने बुलाने का क्या कारण है मार डालना है वा जी-
ता छोडता है यह सुन हातिम ने कहा कि हुस्नबानू सौ
दागर की बच्ची पर मुनीरशामी बादशाहज़ादा आशि
क़ हुआ है अपना घर बार छोड उस के शहर की सरा-
य में बैठ रहा उस के लिये में कई बरस से दुख और क्ले
श सहता फिरता हूं उस सौदागर बच्ची की छः बातें पर
मेश्वर की कृपा से पूरी हो चुकी अब सात वी बात हम्मा
म बादगर्द के समाचार लाने की है सो लेने जाता हूं-
देखिये परमेश्वर क्या दिखावै वह बोला धन्य है तुझै
और तेरे मा बाप को जो दूसरे के लिये अपना सुख
चैन छोड परिश्रम और आपदा सही पर उचित यह-
है कि इस मनोर्थ को मन से दूर कर लौट जा और उससे
कहो कि वह अंधकार है कोई उसे नहीं जानता न उसका

पता मिलता है यह सुन हातिम बोला कि इस से पर
मेश्वर रक्षा करै झूठ कैसे बोलों और बात बनाऊं यह न
चाहिये बहुत दिनों से उस की चाह में मुनीरशामी के
प्राण और पर आ रहे हैं केवल मिलाप की आशा भर
स्वांस चलती है और मैं ऐसे समय में झूठी बातें बना
ऊं और उस काम को छोड दूं परमेश्वर को क्या उत्तर
दूंगा क्योंकि जो कोई परमेश्वर हेत सन्नद्ध होता है वह
झूठ नहीं बोलता जिन्हों ने परमेश्वर के मार्ग में अपना
घर बार छोडा है उन का मनोर्थ निःसन्देह सिद्ध हुआ
उस वृद्ध ने फिर कहा कि हातिम अपनी तरुणाई पर
दया कर उस ओर न जा क्योंकि वहां का जाना जगत
से जाना है जो मेरा कहा न मानैगा तो पछितायगा जै
से मेंढक ने अपनी जाति वालों का कहना न माना फिर
पीछे पछिताया हातिम ने पूछा कि उस का वृत्तांत कैसा
है वह बोला कि श्याम के देश में एक नदी थी उस में ब
हुत से मेंढक रहते थे एक दिन किसी मेंढक ने अपनी
जाति वालों से कहा कि जी चाहता है कि यहां से और
कहीं चलें और दूसरी नदी में जा बसैं क्योंकि विदेश
में बहुत लाभ है भिक्षुक दरिद्री धन वान हो जाते हैं घ
र में किसी को धन नहीं मिलता हाथ पैर हिलाये विन
संपदा हाथ नहीं आती यह सुन उस की जाति वालों
ने कहा कि अरे मूर्ख यह झूठी कल्पना है इस्से कभी
सुख न मिलेगा वृथा क्लेश पा के अंत को अपने किये
पर पछितायगा उस ने न माना अपने भाई बंद स्त्री-
पुत्र समेत वहां से निकल किसी नदी की ओर चला य-
द्यपि जल जीवों को सूखी धरती में चलना बहुत कठिन
है उस पर भी वह उछलता कूदता आनंद से चला जाता

था राह में एक तालाव मिलगया उस में एक सांप था उ
स ने वहां के सब मेंडक खा के कुछ दिन से अहार वि
न भूख के मारे झुंझला रहा था देखते ही सहसा उन
पर लपका और चुन चुन के एक एक को खा गया
पर वह मेंडक भाग के पुरानी जगह में आपड़ा और
स्त्री बालक सब खो दिये उस की जाति वाले यह दसा
देख यों तायनें दैने लगे कि अरे मूरख तूनें यह क्या कि
या जो अपना बसता घर उजाड़ दिया अपना वृत्तांत तो
कह कि तुम पर क्या बीती वह दुखी बाल बच्चों के सोच
का मारा सिर झुका पे अपने किये को पछितायें सब
की सुनता वे सब बहुत सा भला बुरा कहते पर वह उ
त्तर दैना क्या एक और सांस भी न लेता निदान जो को
ई बड़े बूढ़ों का कहना नहीं मानता उस की यही दसा
होती है मेरा कहना मान यहीं से फिर जा साहस न कर
क्योंकि हम्माम बादगर्द को कोई नहीं पहुंचा तेरा सिर
क्यों फिरा है अपनी औषधि कर ये बातें सुन हातिम बोला
जो तुम कहते हो सो मेरे ही भलाई की बात है पर जो प
रमेश्वर हेत पराये उपकार के लिये हो उस्से मुंह फेर-
ना अच्छा नहीं क्योंकि प्रतिज्ञा भंग करना धर्म विश्वास
से बहुत दूर है मुझे परमेश्वर की कृपा का भरोसा है कि मु
नीरशामी का मनोर्थ मेरे हाथ से पूर्ण होगा जो तुम श
हर कतान का मार्ग जानते हो तो मुझे बता दो जो मैं अ
पना रस्ता लूं उस ने देखा कि इस का दृढ़ विचार है स
च हो लिया शहर के बाहिर जा के कहा कि अरे बटो ही
यहां से दाहिने ओर के रस्ते में जा आगे बहुत से शह
र और कसबे मिलेंगे फिर एक पहाड़ देख पड़ेगा उ
स के नीचे हज़ारों व्याधि और दुख हैं जो उन से बच

जायगा तो एक बड़ा जंगल मिलैगा वहां परमेश्वर के च रित्र देख पड़ैंगे आगे थोडी दूर जा के एक दुराहा मिलैगा उस के बांईं ओर जाना वहरस्ता बहुत अच्छा रमणीक है सुख से शहर कनान में पहुंच जायगा दाहिने ओर का रस्ता यद्यपि शीघ्र पहुंचने का है पर उस में बहुत क्षेश और व्याधि हैं हातिम बोला कि बिन आयुर्दाय कोई जी ता नहीं और बिन मौत मरता नहीं फिर समीप का रस्ता छोड दूर वाले में क्यों जाऊं वह बोला कि तूने नहीं सुना सुगम मार्ग में चलना चाहिये यद्यपि दूर हो और विध वा के साथ ब्याह न कर चाहै वह अपछरा क्यों न हो कोई बिन मौत नहीं मरता परंतु अजगर के मुंह में जाना न चाहिये देख जो मेरा कहा न मानैगा तो दुख पावैगा निदान हातिम उस्से बिदा हो आगे चला कुछ दिन पीछे एक शहर दिखाई दिया उस में बाजे बजते सुने मन में कहने लगा कि क्या इस शहर में किसी घर में ब्याह है जो बहुत से शहर के लोग इकट्ठे हैं और बादशाह ही सि पाही खड़े और बडे बडे तंबू तने हैं और जगह जगह सुथरा बिछौना बिछा है और उस पर लोग सज धज से बैठे हैं और उन के साम्हने बाजे बजते हैं और ना- च रंग हो रहा है और खाने पक रहे हैं यह देख हाति म ने पूछा कि आज इस शहर में क्या उत्साह है वे बोले कि इस शहर की यह रीति है कि बरस वें दिन बादशाह वज़ीर और सब छोटे बडे अपनी अपनी लड़कियों को जो ब्याहने योग्य हुईं दुलहिन बना के सुगंधें लगा खी मों में बिठा देते हैं फिर एक बड़ा सांप जंगल से आता है और मनुष्य बन के सब खीमों में जा उन सब लड़कि यों को देख जो उस के मन भाई उसे ले जाता है हम ने -

मारे डर के विवश और निर्लज्ज हो यह उत्साह किया दे
खिये किस की लड़की ले जाय सब को यही धड़का है
आज बाजे बजते देखते ही कल्ह छाती पीटते देखियां-
एक दिन का सुख और सात दिन का दुख हम को बरस
वें दिन होता है विवश हैं क्या करैं आज अवश्य आवैगा
देखिये किस पर गाज गिरै यह सुन हातिम ने अपने
जी में कहा कि यह जिन्न का काम है फिर उन से कह
ने लगा कि यह बड़ी व्याधि तुम पर है वे बोले फिर क्या
करैं इस में कुछ अपना वश नहीं परमेश्वर जो चाहै सो
करै ऐसा कोई नहीं देखते जो यह व्याधि हमारे सिर से
टालै हातिम बोला कि परमेश्वर की इच्छा से आज की रा
त इस व्याधि को मैं तुम्हारे सिर से दूर करता हूं तुम धी-
र्य रक्खो अपने मन में कुछ चिंता न मानो उन्हों ने अ
पने सिरदारों से जा कहा वे उसे हाथों हाथ बादशाह-
के पास ले गये और सब वृत्तांत वर्णन किया बादशा
ह ने शिष्टाचार कर कुरसी पर बिठा के पूछा कि तुम जा
नते हो कि यह क्या भेद है हातिम बोला कि मैं अच्छे प्र-
कार जानता हूं कि वह जिन्न है अब उन की जाति उपद्रव
किया चाहती है सुरीति छोड़ कुरीति पर चलती और म
नुष्यों को दुख दिया करती है बादशाह बोला कि जो यह
जिन्न तुम्हारे हाथ से मारा जाय वा मेरे शहर से दूर हो
तो मैं अपनी संपत्ति और प्रजा सहित जन्म भर तेरी
आज्ञा में रहूंगा हातिम ने कहा कि मैं जो काम करता
हूं सो परमेश्वर हेत करता हूं जो पैर आगे बढ़ाता हूं अपने
मोक्ष के लिये धरता हूं जो यह भी काम करूंगा तो किसी
पर मेरा भार नहीं जो मैं तुम से कहूं सो करो बादशाह-
ने कहा सिर आंख से फिर हातिम ने कहा कि जब वह

आवै और किसी की लड़की प्रसन्न करके ले चलै तब ल
ड़की का बाप उस्से कहै कि ले जाना तुम्हारे आधीन है
पर इतनी हमारी बात सुन ले कि हमारे बड़े सिरदार का
बेटा बहुत दिनों में आज आया है अब ये सब के सब उ
स के बश हैं उस के बिन कहे लड़की तुम्हारे साथ न-
हीं कर सकते जो तुम्हैं दे देवैं तो बड़ी भूल है क्योंकि तुम
क्रोध करोगे तो एक बरस में हमारे शहर को उजाड़ दो
गे और जो वह क्रोध करैगा तो एक पल भर में भस्म क
र देगा निदान सब दिन हातिम को अपने पास बिठा
रक्खा सांझ को सांप के आने की पुकार मची लोगों ने
हातिम से जा कहा कि वह दुष्ट आ पहुंचा उसने सुन
ते ही बादशाह से प्रार्थना की कि मैं भी उसे देखूं फिर
उठ खड़ा हो खीमे के बाहिर निकला देखा कि एक अ
जगर आकाश से सिर लगाये हुए चला आता है उ-
स की लंबाई का ठिकाना नहीं देव दानव भी उस का
सामना नहीं कर सकते मनुष्य की तो क्या सामर्थ्य-
जो आंख उठा के देखै पत्थर और वृक्ष जो उस की छाती
के नीचे आता है वह पिस जाता है हातिम ने उसे ऐसा
भयानक देख मन में कहा कि परमेश्वर तू ही इस सैं
बचावैगा उस सांप ने पास आके अपनी पूंछ ऐसी क
ड़ी करके हिलाई कि सब मनुष्य सिर झुका के धरती
पर गिर पड़े फिर वह चारों ओर देख और धरती पर
लोट एक सुंदर मनुष्य बन गया तब उन्हों ने उठ के
उसे प्रणाम किया और बादशाह उस के आगे जा कर
अपने खीमे में ले आया और एक जड़ाऊ तख्त पर
बिठाया वह एक क्षण भर बैठ फिर उठ खड़ा हो बोला
कि अपनी अपनी लड़कियां मुझे दिखाओ बादशाह ने

कहा बहुत अच्छा हे रखिये तब उसने वहां से निकल-
सब सिरदारों और नौकरों और सौदागरों की लड़कि
यां देखीं पर किसी को प्रसन्न न किया उलटा फिर बा
दशाह के खीमे में आया जहां शाहजादी बैठीं थी वहां
गया उसे प्रसन्न कर बादशाह से कहा कि मुझे इस
का अभिलाष है मेरे साथ कर दो बादशाह बोला कि
एक बड़े महात्मा का बेटा कितने दिनों से निकल ग
या था वह आया है अब हम उस की आज्ञा बिन कुछ
नहीं कर सकते क्यौंकि वह उसी क्षण में सब सत्यानास
श कर देगा यह उचित है कि आप उसे बुल वालेवें वह
जो कहैगा सो हम करैंगे वह बोला कि अब तक वह क
हां था आज कैसे आया अच्छा बुलवालो हातिम तो
वहां कनात के पीछे ही लग रहा था बुलाते ही सामने
आ खड़ा हुआ वह बोला कि मैं बहुत दिनों से इस शहर
में आता जाता हूं तुझे कभी नहीं देखा अब कहां से-
आगया सच बता तू कौन है और किस लिये हमारे-
आज्ञानुवर्त्तियों को बहिका सत्यानाश किया चाहता
है हातिम बोला जब तक मैं इस शहर में न था तब तक
इन्होंने मेरा कहा किया अब मैं इस देश का मालिक
आया हूं और यहां का सब काम काज मेरे आधीन है
जो हमारे मा बाप दादे की रीति पूरी करता है उसी बे
टी देते हैं उस ने पूछा कि वे कौन सी रीतैं हैं हातिम ने क
हा कि एक मोहरा मेरे पास है पहिले तो उसे घिसके
पिलाता हूं वह बोला जो यह चाल है तो ला मैं पीलूंगा
हातिम ने वह मोहरा जो रीछ की बेटी ने दिया था अ-
पनी जेब से निकाल के थोड़े से पानी में रगड़ उसे दि
या वह न जाना कि इस का पीना मेरे लिये विष है मारे अ

हुंकार के सहसा पी लिया पीते ही जिन्नों की विद्या सब भूल
गया उस पर भी ढिठाई कर कहने लगा कि जो और भी-
कोई रीति रही हो उसे भी करूं हातिम बोला दूसरी रीति
यह है कि तुम एक गोली में उतरो हम उस का मुह बांध
दें और तुम बाहिर निकल आओ तब हम प्रसन्नता से य
ह लडकी तुम्हें दे दें और जो इस में से न निकला तो एक
हज़ार लाल और दो हज़ार हीरे और मोती मुर्गी बी के अं
डे समान जो परियों के देश में हैं गुनहगारी के लेवें वह
मूर्ख अपने बल के भरो से पर सहसा कह उठा कि वह
गोली कहां है शीघ्र लाओ हातिम ने एक बड़ी सी गोली-
मंगवा के उस के आगें रख दी वह उस में झटपट उतर
पडा हातिम उस के मुह पर ढकना ढांक और कस के बां
ध इस्म आज़म पढने लगा और उस से कहा कि अब
बाहिर निकल आ इस आज़म के प्रभाव से वह ढकना
पर्वत से भारी हो गया उस ने कितना ही बल किया पर
न निकल सका तब हातिम ने लोगों से कहा कि इस के
आस पास नीचे ऊपर लकडियां रख आग लगा दो उन्हों
ने वैसा ही किया आग लगते ही मैं जला मैं जला पुकार
ने लगा पर उस के पुकार ने पर किसी ने ध्यान न किया
निदान जल के भस्म हो गया फिर हातिम ने उन सब लो
गों से कहा कि थोडी सी धरती खुदवा के उस में इस को
गाड़ दो और अपने घरों में आ के चैन करो परमेश्वर ने
यह व्याधि तुम्हारे सिर से दूर की नहीं तो न जानिये तु-
म्हारी क्या दशा होती और यह दुष्ट तुम्हारे साथ जाने
क्या करता बादशाह ने यह देख हातिम को बहुत सराहा
और शहर के सब रहने वाले हातिम के पैरों पर गिर पडे
फिर बादशाह ने रुपये अशरफियां वस्त्र रत्नों के थाल मंग

वा के हातिम के आगे रक्खे उसने कहा मुझे न चाहिये पर
मेश्वर ने सब कुछ दिया है जो चाहो तो भिखारियों को देदो
जिस में परमेश्वर प्रसन्न हो और तुम्हें उस का फल मिलै
क्यौं कि जो परमेश्वर हेत सिर देता है वह बदला नहीं चा
हता बादशाह ने उसी घडी कंगालों भिखारियों को वह
सब बांट दिया हातिम तीन दिन वहां रहा फिर बिदा हो
आगे बढा कितने एक दिनों में उस परबत के नीचे प
हुंचा जिस का बरणन उस वृद्ध मनुष्य ने किया था कु
छ सन सना के उस पर चढा जब उस के पार हुआ तब
एक बडा जंगल दिखाई दिया उस में अद्भुत बातें देखीं
भांति भांति के मेवे खाते कई दिन तक चला गया उस से
निकल के एक दुराहा देखा वहां खडा हो अपने मन
में सोचने लगा कि उस वृद्ध मनुष्य ने कहा था कि दा-
हिनी ओर की राह में बहुत सी ब्याधि हैं तू उधर से न-
जाना इस समय उस का कहना किया चाहिये और
बांई ओर का रस्ता लीजिये यह बिचार बांई ओर चला
थोडी दूर जा के यह समझा कि इस राह से जाने में कुछ
लाभ नहीं दाहिनी ओर जाना चाहिये जो परमेश्वर-
सहाय करेगा तो कोई ब्याधि मेरे सामने न आवेगी-
जो आभी जायगी तो उस की कृपा से नष्ट करूंगा बटो
हियों का रस्ता खुल जायगा जो मारा जाउंगा तो परलो
क बनैगा यह बात जी में ठहरा के उस रस्ते से फिरा-
और दाहिनी ओर चला कि बबूलों का जंगल कांटों से
भरा देख पडा परमेश्वर के भरोसे पर वहां जा पहुंचा
और आगे बढा बडे क्लेश से थोडी दूर चला कांटों से कपडे
टुकडे टुकडे हो गये बदन लोहू लुहान हुआ और धरती
के कांटों से तलवे छिद पैर सूज गये तब सिथिल होके का

हने लगा कि उस वृद्ध ने सच कहा था मुझ अभागी ने उ
स का कहना न माना और इस आपदा में आपडा यह
चिंता है कि इस से और कोई भयानक जंगल होतो वहां
कैसे निवाह होगा कितने दिनों में बडे दुख सहि उस जं
गल से निकल आगे बढा कि छिपकलियों के जंगल में
पहुंचा वे मनुष्य की सुगंध पाते ही सब की सब उस के खा
ने को दौड़ीं हातिम ने देखा कि हज़ारों छिपकलियां ची
ते कुत्ते के समान सैकडो लोमडी गीदड सी दौडीं आती
हैं उन्हें देख हातिम डर के कांपने लगा कि इन का आना
साधारण नहीं निश्चय है कि मेरे खाने को आती हैं पर
विवश हूं कुछ उपाय नहीं कर सकता इतने में वे पास
आ पहुंचीं तब एक वृद्ध मनुष्य तेजस्वी दाहिनी ओर से
प्रगट हो कहने लगा कि तू ने बडों का कहना न माना फि
र पछताया हातिम बोला मैंने बुरा किया अपने किये
पर लज्जित हूं तब उसने कहा कि रीछ की बेटी का मोह
रा निकाल के धरती पर डाल दे वे नाश हो जायंगी तब
उस ने तुरंत मोहरा निकाल धरती पर फेंक दिया धर
ती पीली काली फिर हरी हो लाल हो गई छिपकलियां
जो दौडी आती थीं बावली हो आपस में लड मरीं ती
न घडी में कोई न बची हातिम ने यह चरित्र देख अच
म्भे में हो कहा कि परमेश्वर उन कें आपस में ऐसा क्या
बैर हो गया जो एक एक को मार के मर गिरीं निश्चय
इस मोहरे का प्रभाव है परमेश्वर का धन्यवाद करना
चाहिये जिसने इस समय में ऐसे महात्मा को भेजा-
जिसने यह भेद बताया और मुझे व्याधि से बचाया न
हीं तो मेरी बोटी बोटी कर डाल तीं फिर सोच कें देखा
तो किसी को जीता न पाया मोहरा उठाने का विचार

किया फिर सोचा कि मोहरा उठाने से फिर जी न उठैं और सुदै खा जावैं तो प्राण जायं और श्रम वृथा हो शीघ्रता न करना चाहिये यहां तक बैठा रहा कि उन की खाल मांस गल गया हड्डी पसली दिखाई देने लगी तब हातिम मोहरा उठा आगे चला थोड़े दिनों में एक अष्ट धात का जंगल मिला उसका एक एक टुकड़ा जूतियों को छेद पैर की पीठ पर निकलता था और घाव पड़ जाते यह अपने कपड़ों से चीथरे फाड़ फाड़ जूतियों के भीतर रख लेता निदान पैर छलनी हो गये तब अपने मन में कहने लगा कि अरे हातिम तुझ सा मूर्ख जगत में कोई न होगा क्योंकि उस बुड्ढ मनुष्य ने तुझे बारंबार रोका था कि दाहिना रस्ता बहुत बुरा है उधर से न जाना और परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी है कि भला बुरा पहिचाने और सोच विचार कै चलै तू भला चंगा उस सुगम मार्ग में बाईं ओर गया था फिर यह क्या मूर्खता थी जो उसे छोड़ दाहिनी ओर आया अब पछताने से कुछ नहीं होता जो ऊपर पड़ी है उसे सह लेना चाहिये जैसे चला जाय वैसे चल परमेश्वर निबाहने वाला है बड़े क्लेशों से उस जंगल के पार हुआ धन्य परमेश्वर कह के एक जगह बैठ गया वहां जूतियां उतार जो देखा तो सारे पैरों में अष्टधात के टुकड़े एक एक छेद में ऐंच पड़े उन्हें निकालने लगा जब सब निकाल चुका तब पैरों पर कपड़ा लपेट जूतियां पहिन लंगड़ाता चल निकला और अपने मन में प्रसन्न था कि मैं इस व्याधि से बचा पर यह न जानता था कि आगे सब से बड़ी आधि है कुछ दूर चला था कि वहां के विच्छू मनुष्य की सुगंध पाके दौड़े उनमें कितने बिल्ली के और कोई कुत्ते के और बहुतेरे लोमड़ी

समान थे उन के पैर गीदड के से और गला मुरग़ के
समान नख़वते के आकार थे हातिम उन्हें देख सहस
कर कांपने लगा और ऐसा घबराया कि सुरत भूल
गई हाथ पैर फूल गये इधर उधर तकने लगा फिर
वही वृद्ध मनुष्य सहायक आ पहुंचा हाथ पकड कह
ने लगा कि सुचित्त रह घबरा मत धीर्य न छोड हाति-
म बोला कि मुझ में पराक्रम नहीं इन बिच्छूओं से जि
न के डंक ऐसे हैं कि जो पत्थर पर मारै तो टुकडे टुकडे
हो जायं मैं कैसे सामना करूंगा उस ने कहा कुछ चिं
ता न कर वही मोहरा उन के सामने धरती पर डाल
दे और परमेश्वर का चरित्र देख ले हातिम ने अपना
सा मोहरा निकालना चाहा पर हाथ ऐसे कपने लगे
कि न निकल सका उसी वृद्ध मनुष्य ने निकाल के उस
के हाथ में दे कहा कि धरती में डाल दे हातिम ने जो उ
स मोहरे को फैंका वहीं छिपकलियों के जंगल समान
धरती रंग बदल लाल हो गई और बिच्छू भी आप-
स में लडने लगे एक एक के डंक से दूसरे का बदन फ
टगया हातिम खडा देखता था तीन दिन में वे सब आ
पस में लड़के मर गये हातिम भी जब तक वहीं रहा
चौथे दिन उस मोहरे को उठा के परमेश्वर का भजन
स्मरण कर आगे चला कुछ दिन में एक बडा शहर
दिखाई दिया उस में पहुंचा लोगों ने अपूर्वी मनुष्य
देख पास आके पूछा कि तू किस राह से आया उस
ने कहा दाहिनी ओर की राह से वे अचम्भे हो कहने
लगे कि तू जीता कैसे बचा क्या बंबूल के कांटों और
छिपकलियों अस्थान के जंगल बिच्छूओं की बाधा तु
झ पर न पड़ी हातिम बोला कि उन बाधाओं में फंसा तो

या पर परमेश्वर की सहाय से छिप कलियाँ और विच्छू ठिकाने लगीं अब इस राह में अष्ट धात के टुकड़ों और बबूल के काटों की बाधा विन और कुछ खटका नहीं रहा सौदागर जो वहां उतरे थे इस बात के सुनते ही यह विचारा कि अब इसी राह से चलिये दूर की राह में क्यों जाइये क्योंकि यह रस्ता खुल गया कुछ खटका नहीं रहा जो सौदागर आया जाया करेंगे तो शहर भी बस जायगा निदान लाद फांद के चले गये यह समाचार बादशाह को पहुंचा कि एक मुसाफिर के कहने से सौदागर जिस राह में अष्ट धात के टुकड़े और बबूल का जंगल मिलता था उसी राह में चले गये बादशाह ने हुकम दिया कि हरकारे उन के पीछे जावें और मार्ग का वृत्तांत ठीक ठीक निश्चय कर आवें और हातिम को बुला के कहा कि अरे बटोही तूने बिदेश के बहुत से क्लेश सहे कुछ दिन यहां हमारे पास आराम कर फिर जहां जी चाहे चला जाना पर उस का अभिप्राय यह था कि जो तू सच्चा है तो भला नहीं तो सूली दूंगा इस विचार से कुछ दिन उसे ठहराया और उस की चौकसी के लिये कुछ लोग कर दिये कि कहीं जाय नहीं वे लोग जो राह का वृत्तांत निश्चय करने गये थे सौदागरों के पीछे पीछे उन के उतरने का चिन्ह पाते चले गये जब सौदागर छिप कलियों के जंगल से छेम कुशल निकल गये तब लौट के शहर में आ बादशाह से विनती की कि जो इस बटोही ने कहा सो सच्च है इस राह में कोई उपाधि नहीं रही तब बादशाह ने शहर में बिदित कर दिया कि वह राह खुल गई जिस का जी चाहे वे खटके चला जाय फिर हातिम से बड़ी आधीनता कर बोला कि मुझ से भूल हुई

क्षमापन करौ और बहुत सा धन रत्न आगे रक्खा हातिम बोला कि जब से मैं इस आप के शहर में आया हूं कुछ आका अन्याय नहीं देखा आप इतनी आधीनता क्यों करते हैं बादशाह ने कहा कि तुम नहीं जानते मैं ऊपर से तुम्हारा आदर सनमान सुश्रूसा करता था और लोगों से कहि दिया था कि जब तक शेह का समाचार न आवैं तुम जाने न पाओ जो तुम्हारी बात झूठी निकलती तो शहर के बाहर तुम्हें सूली दी जाती कि फिर कोई ऐसी बात न उडावे इस बात को सुन हातिम बोला कि आपने यह बहुत उचित किया था चतुर बादशाहों को ऐसा ही चाहिये कि सच्चे की प्रतिष्ठा करैं और झूठे की गरदन मारैं आप रथा संताप करते हौ और मैंने भी झूठ नहीं कहा था कि अच्छे लोग झूठ नहीं बोलते और इस बात का बुरा भी नहीं मानता बादशाहों को यही चाहिये परमेश्वर सदा आप का ऐश्वर्य्य बढावे और आपका देश आप के बश रहै और जो कुछ आप मुझे देते हैं सो मेरे किस काम का है मैं अकेला हूं इसे कैसे ले जाऊंगा बादशाह ने कहा कि तुम चिंता न करौ मैं तुम्हारे साथ भार बरदारी और कुछ मनुष्य रक्षा के लिये कर दूंगा कि तुम्हारे देश तक तुम्हैं पहुंचा देंगे हातिम ने कहा कि मुझे एक और काम अवश्य है जब तक वह न कर लूंगा तब तक देश की ओर मुह न करूंगा जाने की तो कौन चरचा बादशाह ने पूछा कि वह कौन काम है जो हम जान पावैं तो अपने बश भर हम भी उस काम में साथ दें हातिम बोला कि यह आप की कृपा है पर मैं परमेश्वर बिन और किसी की सहाय नहीं चाहता जो एक ऐसा मनुष्य साथ कर दीजिये कि मुझे कतान शहर का

रस्ता बता देवें तो आप की बडी कृपा है बादशाहने पूछा कि उस शहर में तुम्हारा क्या काम है उसने कहा कि मैंने सुना है कि हम्माम बादगर्द उसी राज्य में है मुझे उस के देखने का बड़ा अभिलाष है बादशाह बोला कियह बात अपने मन से दूर कर क्यौंकि जो कोई उस ओर गया सो जीता न फिरा तू क्यौं अपने प्राण खोया चाहता है वह-बोला जो चाहै सो हो मुझे अवश्य वहां जाना और उस का समाचार लाना है बादशाह ने बहुत रोका और समझाया पर उसने न माना तब दो मनुष्य साथ कर-दिये कि इसे शहर कतान की राह पर पहुंचा दो हा-तिम विदा हो शहर से बाहर निकल शहर कतान की ओर चला कुछ दिन में एक जगह पहुंच उन मनुष्यों ने कहा कि हमारी राज्य का देश हो चुका यहां से कता न शहर की राज्य है अब हमें विदा करो हातिम उन्हें विदा कर आगे बढा जब समीप पहुंचा तब वहां के लो ग उसे देख कहने लगे कि अरे बटोही तू किस राहसे आया उसने कहा कि दाहिनी ओर की राह से यद्यपि उस मार्ग में बडी बाधायें थी पर परमेश्वर ने अपनी कृ पा से सब दूरकीं और मार्ग सुगम हो गया मैं कुशल क्षेम से यहां तक आपहुंचा यह बात सुन सब प्रसन्न हुए हातिम शहर कतान में जाके सराय में उतरा एक दिन दो मोती और दो माणिक बहुत बडे दामों के जैसे बादशाह के यहां थे एक डिबिया में रख बादशाही डौढी पर गया चोबदारों ने अपने सिरदार से कहा कि एक मुसाफिर किसी शहर से आया है उसने ये बात बादशाह से निवेदन की बादशाह ने कहा कि उ-स का वृत्तांत पूछ के आओ चोबदारों ने आके हातिम

से पूछा कि तुम कहां से आते हौ तुम्हारा नाम क्या है
उसने कहा कि में सौदागर हूं मेरा आना शाहाबाद से
हुआ है बादशाह के दरशन का अभिलाष है इस बातको
चोबदारों ने अपने सिरदार से कहा उसने बादशाह
से बिनती की कि एक सजीला सौदागर मधुर बादी-
आप के दर्शन की आशा कर शाहाबाद से आया है बा
दशाह ने आज्ञा दी कि बुलाओ वे जाके हातिम को-
सामने लाये वह बादशाहों के योग्य प्रणाम और-
स्तुति कर आगे बढ़ वे रत्न निवेदन किये उन्हें देखमारे
हर्ष के बादशाह का रंग दमकने लगा उसे कुरसी पर
बिठा वृत्तांत पूछा उसने कहा कि बहुत दिनों से सौदागरी
करता था इस संसार को तुच्छ समझ सौदागरी और-
राज सेवा छोड़ देशाटन अंगीकार किया यहां आके
आपकी इतनी श्लाघा सुनी कि सहसा दौड़ा आया-
कि ऐसा नीति वान बादशाह के दर्शन से दोनों लोक-
की भलाई है बादशाह ने उसकी बातें सुन प्रसन्न होब
ड़ी कृपा से कहा कि कुछ दिन इस देश में रहिके हमें
अपने समागम से आनंद दो यही हमारी भेट है हा
तिमने प्रार्थना की कि यद्यपि हम लोगों को दो चार दि
न भी एक जगह रहना कठिन है पर आप ऐसे विनी
त और दयावान बादशाह की सेवा में रहना सब भांति
भलाई है मैंने तन मन से अंगीकार किया फिर बाद
शाह ने पूछा कि तुम कहां उतरे हो उसने कहा कि स
राय में यह सुन दीवान खास के दारोग़ा को हुकम दिया
कि इन को एक अच्छे से छोटे मकान में उतरवाओ
और बबरची खाने के दारोग़ा से कहि दो कि सांझ सबेरे
दोनो समय साथ खाना खाने के पहुंचाया करें और

कई खिदमतगार भी काम काज के लिये इन के पास भेज
दो यह कहि हातिम की ओर देख के बोले कि हमारा मन
यह चाहता है कि सराय में से आके यहीं रहौ और हमा
री सभा का चमत्कार बढ़ाओ और अपनी मीठी मीठी बा
तें सुना के हमारे मन को आनंद दो हातिम वहां आ रहा
और बादशाह के पास बहुधा रहने लगा इसी भांति छः
महीने बीत गये निदान बादशाह उस पर ऐसा प्रसन्न
हुआ जो एक दिन न देखता तो चैन न पड़ता बुलवा ही
लेता निदान प्राण मन से अधिक हेत करता और बहु
धा अपने मंत्रियों से कहता कि जो यह सदा मेरे शहर
का रहना अंगीकार करै तो सुख से दिन कटैं यह सु
न वे कहते कि आप सच कहते हैं यह ऐसा ही सुशील
मधुर बादी बादशाहों के पास रहने योग्य है एक दिन
जो बादशाह को प्रसन्न बैठे हुए देखा तो कई बहुमूल्य
माणिक और पन्ना फिर निवेदन किये बादशाह ने क
हा कि मैं मन से तेरा बड़ा गुण माने हूं तू बार बार मुझे
क्यों लजाता है मैं तुझ से लज्जित होता हूं क्योंकि इत
ने दिनों से तू मेरे पास है मुझ से कुछ आकांक्षा न की
मेरा जी चाहता है कि जो तुझे चाहिये सो संकोच छोड़
मुझ से मांग ले मैं नाहीं न करूंगा बिन विचार तुझे दे
दूंगा हातिम बोला कि आप के प्रताप से सब कुछ है
किसी बात की घटती नहीं दर्शन करने वालों को सं
सार के बड़े चमत्कार की क्या अपेक्षा है बादशाह ने कहा
कि यह कौन बात है मेरा राज्य सो सब तेरा राज्य है जो
चाहे सो कर बिन पूछे जो कुछ किसी को दिया चाहे सो दे
डाल जो काम चाहे जिस नौकर से ले अब तेरी आज्ञा में
कोई नाहीं न कर सकैगा हातिम ने कहा कि आप सदा चिरं

जीव रहैं और राज्य बना रहै मेरे मन के सब अभिलाष पूर्ण हो चुके हैं एक रह गया है सो मरने तक बना रहै-गा बादशाह ने कहा कि वह ऐसा क्या है जो तू चाहै तो मैं अपनी बेटी भी तुझे दे दूं देश कोष तो क्या वस्तु है हा-तिम ने सिर झुका के बिनती की कि उन्हें तो मैं अपनी ब-ड़ी बहिन जानता हूं यह ध्यान मेरे मन में नहीं वह और ही है इस्से नहीं कह सकता कि जो आप न मानें तो कहि के लोगों में लज्जित हूं बादशाह ने बड़ी कृपा से कहा कि तेरी सुशीलता और प्रीति का भार मुझ पर बहुत है जो बादशाहत भी मांगे तो दे दूं बेगम बिन जो चाहै सोई ले ले सब तेरा ही है हातिम ने हाथ जोड़ बिनती की कि आप यह क्या कहते हैं वे मेरी माता समान हैं और बादशाहत का तख़्त आप को सदा सर्ब्बदा शोभाय मान रहै मेरा अभिलाष और ही है तब बादशाह बोला कि अरे भाई परमेश्वर के लिये कहीं शीघ्र कह मेरा जी उकता गया वह क्या है हातिम ने कहा कि जो आप ब-चन देवें तो प्रार्थना करूं बादशाह ने सौगंद खाके प्र-तिज्ञा की तब हातिम ने कहा कि हम्माम बादगर्द के देखने का मनोरथ है जो आज्ञा हो तो उस का चरित्र देखूं और मन का संदेह मिटाऊं बादशाह ने यह सु-न उदासीन हो सिर झुका लिया और चुप का रहगया हातिम ने बादशाह को ऐसी चिंता में देख पूछा कि आ-पने इतनी चिंता क्यों की मैं सब प्रकार से आप का आ-ज्ञानुवर्त्ती हूं जो आप की आज्ञा होगी सो सिर आंखों के बल करूंगा बादशाह ने सिर उठा के कहा कि प्यारे मु-झे चिंता क्यों न हो बहुत से सन्देह हैं पहिले तो मैंने सौगं-द खाई है कि हम्माम बादगर्द की ओर किसी को जाने न

दूंगा जो तुझे जाने की आग्या दूं तो प्रतिग्या भंग होती है
दूसरे यह बड़ा सोच है कि तुझ सा सुंदर सुशील मनुष्य
अपने जीने से हाथ धोवै तीसरे तुझ सा मनुष्य मेरे पास
आज तक नहीं आया चौथे जो तुझे बिदा करूं तो बिरह
की पीर कैसे सहूं पांचवें जो न जाने दूं तो अभी झूठा हो
ता हूं यह बादशाहों को उचित नहीं क्यौंकि जो झूठा प्रसि
द्ध हो जाऊं तो कोई मेरे बचन और सौगंद की प्रतीति
न करैगा उस से राज काज में बाधा होगी हातिम ने क
हा कि परमेश्वर से पूर्ण आशा है कि उस की कृपा से शी
घ्र समाचार ले कुशल क्षेम से आप के चरण समीप आ
पहुंचता हूं आप कुछ चिंता न करैं निस्सन्देह मुझे आ-
ग्या दीजिये क्यौंकि मैं अपने वश भर इस काम को न
हीं छोड़ता क्यौंकि मुनीर शामी शहजादा बरज़ख सौ
दागर की बेटी हुस्नबानू पर आशिक हुआ है हुस्नबा
नू ने अपना ब्याह सात बातें पूरी करने पर ठहरा रक्खा
है सो मुनीर शामी वे बातें पूरी न कर सका मैंने उस्को
दुखी देख यह काम अपने ऊपर लैके प्रतिग्या की
कि इन को पूरा करूंगा सो छः बातें पूरी हो चुकी हैं
यह सातवी बात रही है परमेश्वर से यह भरोसा है-
कि हम्माम बादगर्द में भी जा पहुंचौं और वहां का-
सब वृत्तांत हुस्नबानू से कहके मुनीर शामी का ब्याह
उस के साथ कर दूं कि उस का अभिलाष पूर्ण हो यह
बात सुन बादशाह ने कहा कि धन्य तुझे और तेरे मा-
बाप को कि दूसरे के लिये यहां तक आपदा में पड़ा
कि मरना भी अंगीकार किया क्यौंकि उधर का गया
फिर नहीं आया बहुत से सौदागर बच्चे उधर जा कर
जीते न लौटे उन को भी उसी ने भेजा होगा यह तो कह

कि तू किस शहर का रहने वाला है और तेरा नाम क्या
है वह बोला यमन का रहने वाला नाम हातिम तै का
बेटा यह सुन बादशाह उठ के मिला और अपने पास
बिठा के कहने लगा कि बादशाहत के लक्षण तेरे माथे
से प्रगट हैं और तेरा सुयश भी प्रसिद्ध है और अधिक
होगा यहां तक कि तेरा नाम लोग दृष्टांत बनावेंगे जो
कोई परोपकारी और दाता धर्मात्मा होगा वह तेरे स-
मान कहावेगा और यह कहिके अपने वजीर को आ
ज्ञा दी कि सामान अरक़ के नाम रुक्का लिख के इसे-
दे दो फिर उठ खड़ा हुआ और हातिम को गले लगा पीर
भरी उसास ले के आंखों में आंसू भर लिये कितने लोग
साथ कर बिदा किया जब तक हातिम देख पड़ा किया त
ब तक टक टकी बांधे देखा किया जब आंखों से ओट हु-
आ बादशाह तख़्त से उठ दुख भरा सा महल में चला
गया और हातिम शहर से निकल हम्माम को चला सा-
थियों से बातें करता चला जाता था पंद्रह दिन बीते ह-
म्माम दिखाई देने लगा हातिम ने साथियों से पूछा कि
यह क्या देख पड़ता है क़िला है वा परबत उन्हों ने कहा-
कि यही हम्माम बाद गर्द का दरवाजा है देखने को तो थो
ड़ी दूर है पर सात दिन में पहुंचेंगे यह कह आगे बढ़े-
सातवें दिन दरवाजे के पास जा पहुंचे तो हातिम क्या दे
खता है कि पहाड़ के नीचे बड़ा लश्कर पड़ा है उस ने
पूछा कि यह फ़ौज किस की है साथियों ने कहा कि ह-
म्माम बाद गर्द के दरबान की हातिम उस लश्कर में ग
या हातिम के साथियों के जो भाई बंद वहां थे आपस में
मिल के पूछने लगे कि तुम्हारा आना कैसे हुआ उन्हों
ने कहा कि इस यमन के रहने वाले मनुष्य के साथ बाद-

शाह ने भेजा है और एक रुक्का भी इसी के लिये लिखा
है निदान हातिम सामान अरक के खीमे में जा साहेब
सलाम कर रुक्के को दिया वह उठके मिला उस रुक्के
को सिर पर रख आंखों में लगा खोल के पढा उस में
लिखा था कि इस यमन के रहने वाले को हम ने बचन
दिया था इसलिये भेजा है जो तू उसे समझा के किसी
भांति उलटा भेज दे तो हम बहुत प्रसन्न होंगे और जो
यह किसी भांति न माने तो हम्माम में जाने देना पर अ
पने बश भर फेरने में परिश्रम करना वह उसे पढ़ते
ही उठ खडा हुआ और हातिम को बडी प्रतिष्ठा से कु
रसी पर बिठा के बडे आदर सनमान से भोजन कराया
फिर बादशाह के लिखे के अनुसार कई दिन तक सम
झाया बुझाया किया पर पत्थर को जोंक न लगी हातिम
ने यह कहा कि तुम यह बात मन से दूर करो जब मैं ने
बादशाह का कहना न माना तब तुम्हारी कब सुनता
हूं मुझे मत सताओ यही भला है कि बिदा करो जब
सामान अरक ने देखा कि यह मेरा समझाना कुछ
भी नहीं सुनता कि ये वे जाये न रहैगा तब बादशाह को
लिखा कि यह अपनी हठ नही छोडता और किसी का
समझाना नही मानता जो आज्ञा हो सो करूं बादशा
हने उसे पढ बहुत दुखी हो आंखों में आंसू भर लिये
और लिख भेजा कि जो न ही माने तो मत रोको जाने दो
जान पडता है कि उस की आयुर्दाय पूरी हो चुकी है ह
म्माम में न्हायगा सामान अरक तो जबाब की राह दे-
खता था हातिम को अपने चलने की पड रही थी उध
र से शीघ्रता इधर से आज कल्ह हो रहा था कि बादशा
ही लिखा आ पहुंचा कि उसे मत रोको जाने दो उस पर-

भी सामान अरक ने बहुत समझाया कि अरे प्यारे अभी कुछ नहीं गया जो जीना प्यारा है तो मत जा नहीं तो- पछतायगा और प्राणभी जायंगे हातिम बोला कि अ ब वृथा बातें मत बनाओ परमेश्वर के लिये मुझे जाने दो तब सामान अरक उठ खडा हुआ और हातिम को- हम्माम के दरवाजे पर ले गया वहां भी खडे हो के ब- हुत समझाया पर कुछ काम न आया हातिम ने ऐसा दर- वाजा कभी नहीं देखा था आंख उठा के देखा तो उस पर लिखा था कि यह तिलिस्मात कयूमर्स बादशाह के समय में बना है इस का चिन्ह बहुत काल पर्यन्त र- हैगा जो इस में जायगा जीता न निकलेगा भूखा प्या- सा मारा मारा फिरैगा जो कुछ जीना होगा तो एक बा ग में जा पडैगा वहां के फल खा के अपनी आयुर्दाय के दिन पूरे करैगा पर यह नहीं होना कि बाहर निकल सकै हातिम ने उसे पढ़ मन में सोचा कि जो वृत्तांत था- सो दरवाज़े पर लिखा पाया भीतर जाना अवश्य नहीं चा- हता था कि वहां से फिरै फिर यह मन में आया कि जो- हुस्नबानू भीतर का वृत्तांत पूछे तो क्या कहूंगा लज्जित होना पडैगा जो होना है सो हो भीतर चला चाहिये लोगों- को बिदा कर आप भीतर गया थोडी ही दूर चल पीछे दे खा तो न उन लोगों को देखा न वह दरवाजा देख पड़ा- एक बडा जंगल था और कुछ दिखाई न दिया तब चिंता करने लगा कि अभी दस बारह पैग से अधिक नहीं- चला कि दरवाजा ऐसा लोप होगया कि उस का चिन्ह भी दिखाई नहीं देता कैसे उसे ढूंढिये और बाहर निक- लिये सारा दिन इसी खोज में फिरा पर दरवाजा नहीं मिला तब मन में कहने लगा कि हम्माम का नाम था-

कि पैर रखते ही मौत के हाथ में पड गया अब विन त्राण दिये छुटकारा नहीं निदान दाहिनी बांई ओर निरख चल निकला पर घबराया हुआ इधर उधर भटकता फिरता कई दिन वीते एक ओर का रस्ता लिया थोड़ी दूर गया होगा कि एक मनुष्य देख पड़ा जाना कि आगे वस्ती होगी उस की ओर चला तो देखा कि वह भी इसी ओर आता है जव पास आ पहुंचा तव उस माया के मनुष्य ने हातिम को सलाम कर आईना निकाल उस के हाथ में दिया हातिम ने उस्से पूछा कि क्या हम्माम समीप है और तू हम्मामी है जो आईना दिखाता है उस ने कहा कि मैं नाई हूं जिस को देखता हूं उसे हम्माम में ले जाके इस्नान की आधुग से न्हिलाता हूं जो आप भी कृपा कर मेरे साथ चल कें हम्माम करें तो मेरे मन का अभिलाष पूर्ण हो कुछ न कुछ मिल ही रहैगा जब हातिम वोला बहुत अच्छा मेरे भी वदन पर राह की धूल से मैल जम रहा है मैं चाहता हूं कि इसे छुडाऊं आज मल मल के बहुत से न्हाने का बडा अभिलाष है तू अकेला ही है कि कोई और भी साथी है उस ने कहा हैं तो बहुतेरे पर आज मेरी ही वारी है आगे आगे हातिम पीछे पीछे नाई प्रसन्नता से चले जाते थे दो-तीन कोस चले होंगे कि एक गुम्बज़ आकाश से मिला हुआ देख पड़ा जब हातिम पास पहुंचा तव नाई भीतर गया और उसे वुलाया ज्यों ही वह भीतर गया त्यों हीं दरवाजा वंद हुआ उस ने घवरा के जो पीछे देखा तो निश्चय वंद हो गया पर देख पड़ता है इस आशा से आगे वढा कि जब चाहूंगा निकल आऊंगा निदान यार हम्मामी उसे हौज़ पर ले गया और कहने लगा कि आप

इस में उतरैं तो वदन पर पानी डाल कें मैल छुडाऊं हा-
तिम ने कहा कि मैं कपडे उतार लूं तो इस में उतरूं पर-
बे लुंगी यह भी नहीं हो सकता तब हम्मामी ने एक बहुत अ-
च्छी लुंगी दी हातिम ने उस में बांध के कपडे रख दिये और
आप हौज़ में उतरा फिर नाई ने एक जडाऊ तास गरम
पानी से भर हातिम के हाथ में दिया उसने सिर पर डा-
ल लिया फिर उसने एक और दिया उसे भी ऊपर-
डाला तीसरी बार जैसे ऊपर डाला वैसे एक तडाका
हुआ और हम्माम में अंधेरा हो गया एक क्षण में अं-
धेरा जाता रहा तो क्या देखता है कि न नाई न हम्माम
न हौज़ केवल पत्थर का एक गुम्मज़ है वहां सब पानी
देख पड़ा क्षण भर भी न बीता था कि पानी पिंडुलियों
तक आ गया हातिम घबरा के इधर उधर देखता था-
और पानी बढ़ के घुटनों से भी ऊपर आ पहुंचा तब तो-
व्याकुल हो के कहने लगा कि परमेश्वर पानी क्षण क्ष-
ण बढ़ता जाता है निकलना नहीं देख पडता मैं ने जा-
ना कि इसी में डूब मरूंगा सहसा घबरा के दरवाज़े की
ओर गया चारों ओर सिर टकराता फिरा पर कहीं रा-
ह का पता न पाया इतने में पानी डुबाव हो गया तब
हातिम तैरने लगा और अपने मन में कहने लगा कि
इस हम्माम से जो लोग निकल नहीं सकते सो यही
कारण है कि तैरते तैरते थके और डूबे इसी तरह
मैं भी हाथ पांव मारते मारते डूब जाऊंगा क्योंकि निकल-
ने के कोई लक्षण नहीं देख पडते बाहर होना तो कहां
हारस बादशाह इसी दिन के लिये मुझे रोकता था मैं
ने उस का कहना न माना बड़ा सोच है कि मुनीरशामी के शोक
से मरा यह कहि के मन को धीरज देने लगा कि परमे

श्वर बड़ा समर्थ है इतना न घबरा दाता की नाव पहाड़ पर चढ़ती है जो यों ही आई है तो भला कि मैं ने अपने लिये ये क्लेश नहीं सहे मरते हुए के जिलाने के लिये अपने प्राण पर जोखिम उठाई है प्रसन्न रहना चाहिये जो परमेश्वर हेत प्राण जायं तो जायं कुछ सोच नहीं इसी प्रकार अपने मन को धीर्य देता था और पानी इतना ऊंचा चढा कि गुम्मज़ में जा लगा और हातिम बहुत थका था कि हाथ पांव सिथल हो गये ऐसा जान पड़ा कि नीचे बैठ जाऊं इतने में एक जंजीर लटकी दिखाई दी हातिम ने सहसा दोनों हाथों से पकड़ ली कि क्षण भर तो सांस लूं कि फिर वैसाही तड़ाका हुआ और हातिम गुम्मज़ के बाहिर होगया और आप को एक जंगल में खड़ा देखा चारों ओर देखने लगा कि जंगल बिन कुछ और दिखाई न दिया मन में प्रसन्न हुआ कि मैं इस तूफान से बचा और माया जाल से छूटा आगे चढ़ा तीन दिन तक भटकता फिरा तब एक बड़ा मकान चमकता देख पड़ा बस्ती की आशा से उसी ओर चला जब पास पहुंचा एक बहुत सुहावना बाग़ देखा मन में विचारने लगा कि ऐसा रमणीक बाग़ यहां किसने बनाया है इस के समीप किसी ओर बस्ती भी होगी जब पास पहुंचा तब दरवाजा खुला पाया भीतर चला गया कई पैग बढ़के जो पीछे देखा तो दरवाज़े का चिन्ह भी न पाया तब तो चिंता करने लगा कि यह क्या व्याधि है इतने दुख सहे पर अभी इस माया जाल से बाहर न निकला निदान विवश हो एक मकान की ओर चला वहां भांति२ के वृक्ष मेवे के ये भरा तो यासी मेवे तोड़ तोड़ खाने लगा कितनी ही खाता पर पेट न भरा

सौ मन के अनुमान खाया पर तृप्त न हुआ पर कुछ थ
क गया फिर तमासा देखता एक बारह दरी के पास जा
पहुंचा उस में बहुत से पत्थर के मनुष्य नंगे खडे थे प-
र एक एक लुंगी बांधे थे सो वह भी पत्थर की अचम्भे में
हुआ कि यह क्या भेद है और गांठ कैसे खोलूं इसी चिंता
में था कि एक तोता बोला कि अरे क्यों खडा है यहां वही
आता है जिसने प्राण से हाथ धोये हों हातिम ने जो-
सिर उठाया तो पिंजरे में एक तोता देखा और दीवार पर
यह लिखा पाया कि इस हम्माम में जो आवेगा सो जीता
नहीं जायगा यह तिलिसमात कयूमर्स बादशाह का-
है एक दिन वह शिकार खेलता हुआ यहां आ निकला
था एक हीरा पडा देखा उसे उठा लिया तुलाया तो सा-
ढे बाईस छटांक हुआ अचम्भे में मंत्रियों और जौह-
रियों से पूछा कि ऐसा हीरा दूसरा मिल सकता है या-
नहीं उन्हों ने कहा कि जब से मनुष्य उपजे हैं न ऐसा-
देखा न सुना तब उसने कहा कि इस को ऐसी जगह में
रखना चाहिये कि किसी के हाथ न लगे यह बात मन-
में ठान यह छलावे का हम्माम बादगर्द बनाया और इ-
स तोते को वह हीरा निगला के पिंजरे में रख वहां लट
का दिया और इस जडाऊं कुरसी पर तीर कमान इ-
सलिये रक्खा है कि जो यहां आके बाहिर निकला चाहै
वह तीर कमान उठा के इस तोते के सिर में तीर मारै जो
तीर लगा तो उसी क्षण बाहर हुआ और हीरा भी पाया
नहीं तो पत्थर का हो जायगा हातिम ने उसे पढ उन पत्थ
र के मनुष्यों की ओर देखा कि जहां के तहां खडे हैं हि-
ल भी नहीं सकते तब यह विचारा कि जो मैं यहां से बा-
हर न निकला तो प्राण इसी जगह खो दिये यही भला है-

कि शीघ्र इन्हीं में मिल के चुप का हो रहूं जो आप को ब-
चाउंगा तो जीते ही दुख में पड़ा रहूंगा किसी उपाय से-
बाहिर होना नहीं देख पड़ता वहां मुनीर शामी मेरी रा
ह देखते सत्या नास्त होगा ये सब उलझेड़े बखेड़े जीते
जी हैं यही भला है कि जीने का आसरा छोड़ पत्थर हो
जा सब चिंता से छूट जायगा परमेश्वर बड़ा समर्थ है व
ह सब अपने काम करलेगा यह मन में ठहरा के कुरसी के
पास गया परमेश्वर का नाम ले तीर कमान उठा एक
तीर लगाही बैठा तोता भड़का तीर ऊचक पिंजरे की छ
त में लगा हातिम घुटनों तक पत्थर का हुआ तोता ज
हां बैठा था वहीं आबैठा और कहने लगा कि यहां से जा
यह जगह तेरे रहने योग्य नहीं हातिम तीर कमान समे
त उछल के सौ पैग पीछे जा पड़ा उस के पैर ऐसे भारी हो
गये जो उठा न सकता था अपनी इस दशा पर आंखों
में आंसू भर कहने लगा कि इतने क्लेश सहि के यहां त
क आन पहुंचा अब एड़ियां रगड़ के मरना क्या भला है
इस से यही चाहिये कि एक तीर और लगा के उन्हीं मू
रतों में मिल जाऊं यह सोच दूसरा तीर मारा वह भी ऊच
गया तब तो हातिम कमर तक पत्थर का हुआ फिर तो
तोता बोला कि अरे परें सरक यह जगह तेरी नहीं है
हातिम आपसे आप दो सौ पैग उछल के उन मूरतों के
पास जा पहुंचा तब तो फूट फूट रोने लगा और क-
हा कि मुझ सा मंद भाग्य कोई नहीं जो तीर उलटा मेरा
ही काम करता है फिर एक ठंढी उसास ले अति दुखी-
हो मन में विचारा कि अपनी मौत अपनी आंखों से दे-
खना न चाहिये इस से यही भला है कि आंखों में पट्टी
बांध एक तीर जो यह रह गया है परमेश्वर के आसरे उसे भी

लगा दे कि ऐसे जीने से मरना भला तोते को ताक आं-
खों में पट्टी बांध परमेश्वर का नाम ले वह भी तीरमारा
कि तोते के प्राण उड़ गये और पिंजरे के बाहिर निक
ल पड़ा इतने में एक आंधी आई घटा उठी बिजली-
कड़कने लगी अंधेरा हो गया सूझने न लगा ऐसी पु-
कार मची कि हातिम अचेत हो गिर पड़ा यह समझा-
कि मैं भी पत्थर हो गया एक क्षण में आंधी और बद
ली जाती रही पुकार मिट गई सूर्य निकल आया हाति
म ने जो आंखें खोलीं तो आप को उन पत्थरों के मनु
ष्यों के पास पड़े देखा जब अच्छा चेत हुआ और जी
ठिकाने आया तो क्या देखा कि न वह हम्माम है न बा-
ग़ न पिंजरा न तोता पर एक हीरा धरती पर पड़ा तारा
सा चमक रहा है हातिम उठ खड़ा हुआ और दौड़-
के उसे उठा लिया और परमेश्वर का धन्य वाद किया
और पत्थर की मूरतें सब की सब मनुष्य हो गये हाति
म को देख कहने लगे कि तू इस जगह कैसे जीता बचा
वह बाग़ किधर गया हम्माम क्या हुआ हातिम ने संपू
र्ण वृत्तांत कहा वे दौड़ के पैरों पर गिर पड़े और कहने
लगे कि हम आज से तुम्हारे गुलाम हो चुके यह आप
की कृपा की फ़ांसी जीते जी हमारे गले से न निकलेगी
इस बात को सुन हातिम ने उन्हें बहुत धीर्य दिया
और उन को साथ ले शाहर कतान को चला यह न
जानता था कि मैं किधर जाता हूं और शाहर कतान
किस ओर है पर परमेश्वर उसे सीधे मार्ग पर लि
ये जाता था थोड़ी दूर चल के वही दरवाज़ा देख पड़ा
जिधर से आया था उस से निकल के सामान अरक़ का
लपा कर दिखाई दिया उधर चला और उस से जामिला

वह देखते ही उठ के बड़े आदर से ले जा के सोने की कुरसी पर बिठाया फिर खाने पीने अतर पान की रीति-भांति की तब हातिम ने वहां का संपूर्ण वृत्तांत वरणन किया और दो चार दिन वहां रहा फिर सामान अरक ने बहुत से लोग साथ कर के शाहर कतान को भेजा कुछ दिन में वहां पहुंच के बादशाह के पास गया बादशाह ने बहुत कृपा से बड़ा आदर सनमान कर अपने पास तख्त पर बिठा के समाचार पूछा उस ने वहां का वृत्तांत विस्तार पूर्वक वरणन कर वह हीरा बादशाह के सामने रख दिया और कहा कि यह आप की भेट है पर इतना चाहता हूं कि एक बार हुस्नबानू को दिखा लूं जिस में उस को निश्चय हो जाय फिर आप के-पास भेज दूंगा बादशाह ने प्रसन्न हो के कहा कि अच्छा फिर हातिम ने बिनती की कि ये जो मेरे साथ आये हैं पत्थर के हो गये थे उन में बहुतेरे बड़े आदमियों के बेटे और सौदागर बच्चे हैं सवारी और राह की वस्तु उन के पास नहीं है मेरी यह प्रार्थना है कि उन्हें एक एक घोड़ा और राह खर्च मिले तो सुख पूर्वक अपने घर पहुंचें और आप का भला मनावें तब बादशाह ने उस के कहने से वैसा ही किया फिर हातिम भी विदा हुआ तब बादशाह ने बहुत सा साज और सामान साथ कर बड़े ऐश्वर्य से विदा किया-हातिम कई महीने में उसी ठाठ से शाहाबाद पहुंचा-लोगों ने उसे पहिचान हुस्नबानू से जा कहा कि वह मनुष्य जो हम्माम बादगर्द का समाचार लेने गया था सो बड़े ठाठ से आया है जब हुस्नबानू ने चोबदारों के सिरदार को भेजा कि मेरी ओर से सलाम पहुंचा कै-

कहौ कि जो कुछ क्लेश न हो तो इसी ओरचले आवें-
वह दौड़ा गया और हातिम से वह संदेसा कहा जब
वह उसी ओर गया हुस्नबानू ने उसी भांति भीतर-
बुला लिया और जड़ाऊ कुरसी पर बिठा के समाचार
पूछा उस ने सारा वृत्तान्त उस गरमी से बरणन किया
कि वह सुनते ही ठंढी हो गई फिर हीरा निकाल कर
दिखाया तब हुस्नबानू ने सिर नीचा कर लिया मारेला
ज के पसीना पसीना हो चुप रह गई हातिम ने कहा कि
मैं अपनी बात पूरी कर चुका अब तूभी अपने कह-
ने का निबाह कर उस ने धीरे और मधुर बचन से
उत्तर दिया कि मैं भी तुम्हारी हो चुकी जो चाहै सो कर
जिसे चाहै उसे दे डाल अपने पास रक्खा चाहै अपने
पास रख यह बात सुन वह बोला कि जो तू ने कहा सो
मैंने किया अब जो मैं कहूं सो तू कर मैंने ये परिश्रम
अपने लिये नहीं किये परमेश्वर हेत मुनीर शामी के
लिये किये हैं तुझे उचित है कि उसे अंगी कार कर क्यों
कि वह बहुत दिनों से तेरे बिरह में रोता है और तेरे
बिरह की व्यथा से प्राण खो रहा है अपनी प्रीति के रो
गी को मिलाप की औषधि अवश्य पिलाना चाहि
ये इस को न करना लोक परलोक के लिये बुरा है
जब हुस्नबानू बोली कि अब तुम मेरे बाप की जगह
हो जो मेरे लिये उचित जानो सो करो औ वह मेरे प
ति होने योग्य हो तो मुझे नाही नहीं यह सुन ते ही-
हातिम ने मुनीर शामी शाहज़ादे को कहला भेजा कि
तुम कपड़े बदल अच्छी सज धज और बड़े चमत्कार
से मेरे पास आओ वह अच्छे ठाठ से बड़े आनंद स
हित वहां आया हातिम ने उसे भी एक जड़ाऊ कुरसी

पर अपने पास बिठा लिया हुस्नबानू ने जो झांक के देखा तो उस पर आशिक़ हुई और नीची आंखें कर लाज के मारे वहां से उठ दूसरे मकान में चली गई हातिम भी मुनीर शामी को साथ ले सराय में आके रात की रात वहां रहा प्रातःकाल हुस्नबानू ने एक बहुत अच्छा बड़ा मकान सजवाया हातिम मुनीर शामी सहित उस मकान में आ के और नौबत खबादी ब्याह की तयारी होने लगी नाच रंग आनंद की सभा जमाई कई दिन पीछे बादशाही कीसी साचक भेजी दूसरे दिन उधर से उसी ठाठ से मेंहदी आई उस के प्रातःकाल ब्याह की धूम पड़ी मकानों में बिछौने बिछे बरातियों ने चम चमाते कपड़े पहिने बहुत से नायफ़ बुलवाये रोशनी के लिये मीना कारी के ठाठ कर दोनों ओर दुलहिन के महल तक बंधे आतश बाजी की चादरें युक्ति पूर्वक लगादी और सितारों के लाखों गंज गड़वा दिये आधी रात को मुनीर शामी बड़ी धूम धाम और ऐश्वर्य चमत्कार से ब्याह ने चढ़ा वहां भी आनन्द सभा बन रही थी बाजे बज रहे नाच हो रहा था और बहुत से लोग आगौनी लेने गये दूल्हा को लाके बादशाही मसनद पर बिठाया हातिम उस के पास जाके एक मसनंद पर बड़े आनंद से बैठा और बराती भी अपनी अपनी जगह बैठे उस समय के राग रंग शोभा चमत्कार की सभा का हर्ष आनंद देखने वालों को प्राप्त हुआ लिखने में नहीं आ सकता जब काजी आया और सब कुनबे के स्त्री पुरुष इकट्ठे हुए कुल रीति से ब्याह हुआ फिर दुलहिन को बिदा करा धूम धाम से अपने महल में आया चार दिन तक महल से बाहिर न नि

कला पांचवें दिन बाहिर निकल हातिम के पैरों पर गि
र पड़ा उस ने शाहज़ादे को उठा के छाती से लगा के
मुबारक़ दुआ दी और विदा मांगी मुनीरशामी ने दो-
चार दिन और ठहराया फिर आनंद की सभा बनाई ब-
ड़े आदर सनमान से भांति भांति के परम स्वादिष्ट खा
ने खिलाये तब हातिम ने कहा कि भाई अब मुझे विदा
कर अपनी स्त्री इस्ना सब की समझ मुनीरशामी ने ल-
ज्जित हो के उसी समय विदा किया वह बड़े हर्ष से च
ला थोड़े दिनों में यमन के पास जा पहुंचा उस के
आने का समाचार बादशाह ने सुना तब वज़ीर को
आगे लेने के लिये भेजा वह उसे बड़े ऐश्वर्य से बाद-
शाह के सामने लेगया उस ने दौड़ के छाती से लगाया
हातिम पैरों पर गिर पड़ा तब बादशाह ने उठा के मत्था
चूम महल में लेगया हातिम ने अपनी मा को झुक
के सलाम किया उसने सिर से पैरों तक बलायें लीं
और उस ने पैर चूमे तब माने छाती से लगा जी ठंढा
किया महल और शहर में घर घर आनंद की धूम
मची बादशाह ने सब छोटे बड़े को खिलअत और
इनाम दिये और मलिका ज़री पोश का हातिम के सा
थ नये सिर से ब्याह किया जब तो सब के सब परमे-
श्वर का धन्य वाद कर आनंद में मगन हुए और तब
बादशाह अपनी सभा में आ बैठे और मंत्रियों से क
हा कि संसार में ऐसे भी होते हैं कि दूसरे के लिये अप
ना सुख छोड़ें और उन के काम में क्लेश सहैं वास्तव
में दोनों लोक की भलाई उन्हीं की है और जीना मरना
उन्हीं का उत्तम है यह कहि के बादशाह एकांत में जा
बैठे और हातिम को बादशाह किया दस बरस और सात

महीने औ दिन में हातिम की सात सैर पूरी हुई और मुनीर शामी का मनोर्थ पूर्ण हुआ न यह रहा न वह रहा कहने सुन्ने को एक कहानी रह गई जैसे उन के दिन फिरे तैसे सब के फिरै ॥ लिपिरियं राधा कृष्णस्य मिती ज्येष्ठ सुदी ११ शनिवार

संवत् १९२३

इतिश्री सभाश्रृंगार संपूर्णम्

अरज़

जो कि यह किताब बड़े परिश्रम और रुपया ख़र्च कर तरजुमा कराई है इस लिये आशा है कि मुआफ़िक़ क़ानून २० सन् १८४७ ईसवी के बिदून इजाज़त मुहतमिम और तरजुमा करने वाले के कोई साहब इस किताब को न छापे ॥

दस्तख़त शिवनारायण मुहतमिम
मतबअ़ मुफ़ीद ख़लायक़

التماس

جو کہ یہہ کتاب فیض انتساب بحسن سعی و کوشش بلیغ و نیز بصرف زر ترجمہ ہوئی ہی لہذا امید ہی کہ حسب منشار قانون بستم ۱۸۴۷ع کوئی صاحب بلا اجازت مہتمم اور مترجم کے قصد چھاپنے کتاب ہذا کا نفرماوین فقط

المشتہر
شیو نراین مہتمم مطبع مفید خلایق آگرہ